अभिनव भारत -
संकल्पना एवं स्वरूप

विचारों, शोधपत्रों एवं सारांशों का सङ्कलन

समन्वय, संयोजन एवं सम्पादन :

नरपतसिंह शेखावत

चेतन प्रकाश सेन **वासुदेव प्रजापति**

महेन्द्र कुमार दवे **नन्दकिशोर सोनी**

प्रकाशन एवं आयोजन

राजस्थान संस्कृत अकादमी, जयपुर

विद्वत् परिशद विद्याभारती, जोधपुर

साईन्टिफिक पब्लिशर्स

end

साईन्टिफिक पब्लिशर्स (इण्डिया)
5-ए, न्यू पाली रोड, पो. बा. नं. 91
जोधपुर-342 001 (राज.)
टेलिफोन : 0291-2433323
E-mail: info@scientificpub.com
Website : http://www.scientificpub.com

idk'kd
राजस्थान संस्कृत अकादमी, जयपुर
विद्वत परिषद् विद्या भारती, जोधपुर
'श्रुतम्', केशव परिसर, कमला नेहरू नगर, जोधपुर
दूरभाषः 0291–2757941 | email: vbssjod@gmail.com

© fo|k Hkkjrh] tk/kiqj 2019

समस्त अधिकार आरक्षित है इस प्रकाशन अथवा इसमें प्रस्तुत रूपान्तरित संक्षिप्त अनुवादित या भण्डारित पुनः प्राप्य प्रणाली, कम्प्यूटर प्रणाली, छाया चित्रांकन या अन्य पद्धतियों में अथवा किसी भी प्रारूप में संचारित अथवा किसी साधन से इलेक्ट्रॉनिक यान्त्रिकी प्रतिलिपीकरण, ध्वनि अंकन अथवा अन्यथा साधन से प्रकाशन की पूर्व लिखित अनुमति के बिना प्रकाशित नहीं की जा सकेगी।

अस्वीकरण- यद्यपि प्रत्येक प्रयास त्रुटियाँ और लोगों को टालने का है यह प्रकाशन इस समझ-बूझ पर है कि न तो सम्पादक (या लेखक) ना ही प्रकाशक ना ही मुद्रक, किसी भी रूप से किसी व्यक्ति के प्रति जिम्मेदार नहीं हो सकेंगे। इस प्रकाशन में यदि किसी त्रुटि या लोप के लिये अथवा उस किसी कार्यवाही के लिये ही जो इस कार्य के आधार पर की जाये। कोई असावधानी की विसंगति प्रकाशक के ध्यान में भविष्य के संस्करण में उसके सुधार के लिये लायी जा सकेगी यदि उसका प्रकाशन हो।

व्यापार चिन्ह सूचना- उत्पादन अथवा निगमन नाम, व्यापार चिन्ह अथवा पंजीकृत व्यापार चिन्ह हो सकेंगे और उसका उपयोग उल्लंघन, के इरादे के बिना केवल पहचान या स्पष्टीकरण के लिये किया जा सकेगा।

ISBN: 978-93-88449-69-4
eISBN: 978-93-88449-71-7

lg;kx jkf'k % ₹ 300 ek=

भारत में मुद्रित

राजस्थान संस्कृत अकादमी

के सहयोग से

सन् 2018 को
जोधपुर में आयोजित अन्तराष्ट्रीय सङ्गोष्ठी
में
प्रस्तुत आलेखों का
सम्पादित सङ्कलन

सम्पादकीय

विश्व पटल के दार्शनिकों, विचारकों, लेखकों, वैज्ञानिकों, धर्मशास्त्रियों एवं धर्मगुरुओं द्वारा भारत के प्रति व्यक्त विचार सुनकर व पढ़कर आनन्ददायक अनुभूति होती है। वर्तमान में भी विश्व में भारतीय संस्कृति एवं वैज्ञानिक प्रतिभाओं का सम्मान है। हमारे धर्म ग्रन्थों में निहित आध्यात्मिक विचारों, वैज्ञानिक सोच, प्रकृतिज्ञान, पर्यावरण अनुभूति एवं वैज्ञानिक सोच का उल्लेख Schroedinger के "What is Life" जैसे ग्रन्थों मे मिलता है। परमाणु वैज्ञानिक J. R. Oppenheimer की अभिव्यक्ति में मिलता है। Alex von Tunzelmann की Indian Summer (2007) के पार्ट I के प्रथम अध्याय में महाराणा प्रताप के भारत की सुखदायक झलक मिलती है। आधुनिक लेखक L. Friedman के The World is Flat में भारत के बारे में दी गयी टिप्पणियां प्रेरणा देती है कि हमें अपने देश पर गर्व होना चाहिए। हमें स्वाभिमानी भारतीय होना चाहिए।

Dr. D. Sarewitz, Arizona State University अमेरिका ने 23 अगस्त 2012 Nature, पत्रिका (Vol. 488, Page 431,) में The Higgs boson (God Particle) एवं हिंदु Cosmology एवं Angkor Wat (Combodia) के हिन्दु मंदिर के बारे में लिखते हुए व्यक्त किया है

"I am an atheist, and I fully recognize science's indispensable role in advancing human prospects in ways both abstract and tangible. Yet, whereas the Higgs discovery gives me no access to insight about the mystery of existence, a walk through the magnificent temples of Angkor offers a glimpse of the unknowable and the inexplicable beyond the world of our experience."

भारत के कृषि वैज्ञानिक डॉ. एम. एस. स्वामीनाथन के सम्मान में येरूशलम विश्वविद्यालय, इज्राईल के उपकुलपति ने उद्‌बोधन में कहा ''प्रोफेसर स्वामीनाथन उस राष्ट्र से आते हैं जहां पर 2000 वर्षो के अन्तराल में यहूदियों (Jews) के साथ कभी भी अत्याचार नहीं हुआ। चीन के विद्वान एवं राजदूत Hu Shih ने एक बार कहां ''India Conquered and Dominated China for 20 Centuries without even having send a single soldier across the Border'' परमपिता ने भारत को प्राकृतिक संसाधनों एवं जैवविविधताओं का कोष प्रदान किया। प्रखर रूसी वैज्ञानिक एन. आई. वेविलोव के Centers of Origin (Centers of Diversity) प्रस्ताव में अखण्ड भारत की जैवविविधता झलकती हैं। पर्यावरणविज्ञ ई.ओ. विल्सन के Half-Earth ग्रंथ (2016) के पेज 133 पर जैव मण्डल पर The Best Places in the Biosphere में The Western Ghats of India, Bhutan, Myanmar अंकित हैं।

पवित्र हिमालय पर्वतमाला धरा का तीसरा ध्रुव (Third Pole) एवं विश्व में शुद्ध जल की मीनार (Fresh water tower of the world) है। यह जीवन दायिनी सिंधु, जमुना, गंगा, बह्मपुत्र एवं मेकांग आदि कई नदियों का उद्‌गम स्थल है। हिमालय के हिमनद (Glaciers) एक ओर आश्चर्यकारी जैव-विविधता का श्रोत है। जीवाणु वैज्ञानिक E. H. Hankin ने 1896 में Jumna et du Gange (यमुना एवं गंगा) के पवित्र जलों में जीवाणुमारक क्षमता (L'action bactericide) की खोज की जो हैजाकारक (Microbe du cholera) एवं अन्य व्याधिकारक जीवाणु-प्रजातियों को समाप्त करती हैं। अब हम जानते हैं कि इन स्वशुद्धिकारक जल धाराओं में जीवाणु भक्षक विषाणु (Bacteriophages) उपस्थित रहते हैं। यह जानकारी बेक्टिरियोंफाज की खोज के 20 वर्ष पूर्व आयी। चिकित्सा विज्ञान में Phage therapy आधुनिकतम विचार है। मानव-, प्राणी - एवं वृक्ष-कल्याणार्थ आयुर्वेद पवित्र वेदों में वर्णित है (Nature, 8 September, 2016 Page 552, Volume 538).

भारत के नालंदा, तक्षशिला एवं विक्रमशिला जैसे ज्ञान एवं विद्या के केन्द्रों का उल्लेख सर्वविदित हैं। इन विश्वविद्यालयों में अनेक विषयों पर शौध एवं ज्ञानार्जन होता था। विद्यार्थी-शिक्षको का अनुपात अति उत्तम था। देश-विदेश के नागरिक ज्ञानार्जन के लिए आते थे। अठारवी सदी से वर्तमान तक भारतीयों एवं भारतीय मूल के साधकों, वैज्ञानिकों एवं विद्ववानों ने मानविकी, वाणिज्य-व्यवस्था एवं प्रबन्धन, विज्ञान-तकनीकी के अन्यान्य क्षैत्रों में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। बायोटेक्नोलॉजी, नैनोटेक्नोलॉजी, ब्लोकचेन टेक्नोलॉजी जैसे क्षैत्रों में शौध से लेकर शक्तिशाली अतिविवादित, चमत्कारी, जीन-(अभेद), जीनोम-संपादन (Gene-, Genome-editing) जैसे क्षैत्रों में जहां एक-एक दिवस की

प्रगति आँकी जा रही (सुरक्षा की दृष्टि से) व गुप्तचर/सतर्कता एजेंसियों द्वारा निगरानी की जा रही है। भारतीय वैज्ञानिक अपने-अपने स्थानों पर इन क्षैत्रों में भी अग्रणी हैं। यही नहीं, J.B.S. Haldane जैसे प्रखर मानवतावादी वैज्ञानिक भारतीय नागरिक एवं शाकाहारी बने। शाकाहार भूमण्लीय तापन को कम करने वाला कारक है। मांसाहार पर्यावरण के लिए हानिकारक है। डॉ. हालडेन ने ब्रिटिश नागरिकता का त्याग किया। नोबेल विजेता पीटर मेडावर ने अपने शब्दों में डॉ. हालडेन को ''मेरी जानकारी में समय का परम चतुर पुरूष'' बताया। और 1961 में डॉ. हालडेन ने भारत को ''The closest approximation of the free word'' स्वीकार किया।

विश्व के समस्त राष्ट्रों, धर्मों एवं व्यवस्थाओं में हमारी मातृभूमि की सहिष्णु छवि (Soft Image) बारम्बार मिलती है। यह सच है कि हमारे राष्ट्र-जीवन में भी थोड़ा सा समय ऐसा आया जब हमारी संस्कृति, समाज एवं व्यवस्थाएँ छिन्न-भिन्न हुई उसका नकारात्मक स्वरूप सबके सामने आया। उसके भी अनेक कारण रहे, यथा- आतताइयों के भीषण व बर्बर आक्रमण। प्राकृतिक परिवर्तनों एवं विपदाओं तथा राष्ट्रजीवन की ऐतिहासिक भूलों ने हमारे देश को विचलित एवं विपन्न अवश्य बनाया परन्तु समूल नष्ट नहीं किया। 17वीं एवं 18वीं शदी में भारत से लूटकर East India Company के Elihu Yale (येल) ने द्रव्य एवं धन प्रदान कर विश्वविख्यात येल विश्वविद्यालय (Yale Univerity) स्थापित कर अपना नाम महान दाताओं में लिखवाया। विश्व आज भी हमारी चिरंजीविता का लोहा इन शब्दों में मानता है-

यूनान, मिस्र, रोमां सब मिट गये जहाँ से,
कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी।।

हमारी हस्ती इसलिए नहीं मिटती कि हमारी आध्यात्मिक संस्कृति, हमारे जीवन मूल्य और हमारा प्रकृति प्रेम सब में उस परमपिता परमात्मा का वास मानता है, 'कण-कण में भगवान' की मान्यता रखकर सबके प्रति सहिष्णुता का समरसता का व्यवहार करता है।

अभिनव भारत मे हमारे अतित एवं वर्तमान पर विचार होना चाहिये। हमारे संसाधनों एवं क्षमताओं का विश्लेषण हर स्तर पर होना भी आवश्यक हैं।

संघ विचारों से पोषित विद्वत परिषद के सदस्यों ने 2018 में महत्त्वपूर्ण निर्णय लेकर ''अभिनव भारत संकल्पना एवं स्वरूप (Abhinav Bharat Concept & Form) पर एक अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठी (International Seminar) 4-5 अगस्त 2018 को आयोजित करने का संकल्प लिया।

आनन्द का विषय यह रहा कि वैज्ञानिकों, विचारकों, साधकों, संतो, व्यवस्थापकों, निर्देशकों, एवं शोधछात्रों ने इस संगोष्ठी में उत्साह जनक भागीदारी की। प्रस्तुत ग्रन्थ में मनीषियों, वैज्ञानिकों, शोधकत्ताओं के आलेख संकलित किये गये है। सम्पादकसमूह उनके प्रति हार्दिक आभार प्रकट करना कर्तव्य मानता है।

राजस्थान संस्कृत अकादमी की अध्यक्षा डाक्टर जया दवे एवं अकादमी के सदस्यों के सौजन्य से संस्कृत, हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषाओं में संगोष्ठी के विभिन्न उपविषयों-अभिनव भारत एवं शिक्षा, धर्म संस्कृति, सामाजिक व्यवस्था, राष्ट्रीय सुरक्षा, कृषि, वाणिज्य-उद्योग, विज्ञान-तकनीक, प्राकृतिक संसाधन, पर्यावरण उपविषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किये। ग्रंथ के वर्तमान स्वरूप को लाने में संस्कृत की प्रोफेसर सरोज कौशल, डॉ. यादरामजी मीणा, शोध-छात्रा जीनतजहाँ पठान, डॉ. दिव्या राठौड़, IIT जोधपुर के निर्देशक डॉ. सी. वी. आर. मूर्ति, AFRI के निदेशक डॉ. इन्द्रदेव आर्य, Defence lab के निदेशक डॉ. सम्पतराज वडेरा, जोधपुर कृषि विश्वविद्यालय के उपकुलपति डॉ. बलराजसिंह, विज्ञान संकाय की अधिष्ठाता, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय की प्रोफेसर संगीता कुम्भट एवं सीमा सुरक्षा बल के DIG श्री रवि गांधी के हम हृदय से आभारी हैं।

किसी भी संगोष्ठी की सफलता में कार्यालयीन कार्यकर्ताओं की भूमिका अति महत्त्वपूर्ण होती है। श्री अनिलजी राखेचा, श्री सवाईचन्दजी टाक, सम्पतलालजी, एवं लोकेश मीणा विद्याभारती जोधपुर प्रान्त के सहयोग का हम सम्मान करते हुए उनके प्रति अपना आभार प्रकट करते हैं।

हम साईंटिफिक पब्लिशर जोधपुर के श्री पवनकुमार शर्मा, तनय शर्मा एवं जावेद अली शेख के आभारी हैं, जिन्होंने ग्रन्थ के प्रकाशन में अथक परिश्रम कर इसे आपके हाथों तक पहुँचाने में हमें समर्थ बनाया हैं।

एक बार पुनः प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष सहयोग करने वालें सभी महानुभावों का हार्दिक आभार।

नरपतसिंह शेखावत
संयोजक अन्तराष्ट्रीय संगोष्ठी

सत्यमेव जयते

वसुंधरा राजे
मुख्यमंत्री राजस्थान सरकार

संदेश

यह हर्ष का विषय है कि राजस्थान संस्कृत अकादमी जयपुर एवं विद्या भारती, जोधपुर के संयुक्त तत्त्वावधान में 'अभिनव भारत-संकल्पना एवं स्वरूप' विषय पर आयोजित संगोष्ठी के शोध पत्रों की स्मारिका का प्रकाशन किया जा रहा है।

विद्या भारती राजस्थन ऐसी संगोष्ठियों के माध्यम से देश में भारतीय संस्कृति, धर्म और आध्यात्मिकता के साथ ही सामाजिक और धार्मिक समरसता बढ़ाने का कार्य भी कर रही है। राष्ट्र गौरव और भारतीय संस्कारों के प्रति चेतना जगाकर ही हम आदर्श समाज का निर्माण कर सकते हैं। आज के युग में इसकी विशेष आवश्यकता है।

आशा है कि स्मारिका में प्रकाशित होने वाले शोध पत्र शोधार्थियों को एक मंच प्रदान करेगी तथा इसके माध्यम से रचनात्मक विचार ज्यादा से ज्यादा लोगों तक पहुचेंगे।

मै स्मारिका के सफल प्रकाशन की कामना करती हूँ।

(वसुन्धरा राजे)

संस्कार से संस्कृति की ओर

नवीनता का संचरण प्रतिक्षण जहाँ है, वही अभिनव है। जो विश्व के भरण-पोषण की क्षमता रखता है वह भारत है। अभिनव भारत यानि अपने मूल स्वरूप के साथ विज्ञान को आत्मसात् करता विचारक भारत, अपनी नैतिक प्रतिष्ठा के साथ दम भरता भारत, चरित्र बल से स्वाभिमानी होता भारत। भारत सदैव सम्पन्न है, दैवीय शक्तियों से अलंकृत है, महापुरूषों से विभूषित है, वैदिक वाङ्मय से सुसज्जित है, संस्कारों से इसकी विराट संस्कृति सम्पूर्ण मानवता को आह्लादित करती है। हमारे यहाँ प्राणी से प्राणी को जोड़ने वाली महत्त्वपूर्ण कड़ी या ''साँकल'' है, संस्कार। जीवन में जीवत्व का जब अभिसंधान होता है तभी से उसके विकास की क्रमिक प्रक्रिया मनीषियों द्वारा सोची जाती है। उसी क्रमिक प्रक्रिया को 16 संस्कारों के रूप में अभिव्यक्त किया जाता है।

प्रत्येक कार्य का कोई कारण भी होता है और लक्ष्य भी। संस्कार संस्कृति को सुगठित रखने का कार्य करते हैं। लक्ष्य है पुरुषार्थ चतुष्टय की सिद्धि। भारतीय संस्कृति के चार स्तम्भ हैं- धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष। धर्म का अर्थ हुआ धारण करने की क्षमता, जड़-चेतन में स्थित नैसर्गिक गुण को ही धर्म कहते हैं। जैसे पानी का धर्म है शीतलता, अग्नि का धर्म है तेज, वैसे मानव का धर्म है सत्य। सत्य को सहजता से स्वीकार करना ही मानवीयता है। इसी सत्य की नींव पर आधारित है हमारी विहंगम वर्ण व्यवस्था। जिसके द्वारा व्यक्ति स्वयं अर्थ सम्पन्न बनता है और समाज को भी पुष्ट करता है। धर्मयुक्त विद्या से उपार्जित वित्त को ही अर्थ कहते हैं। मन की पवित्रता एवं कार्य के प्रति पूर्ण समर्पण से जो धन कमाया जाता है वह कभी गलत कार्यों में व्यय नहीं होता है। उस धन से पोषित परिवार सुखी रहता है और वहाँ संस्कार हीनता होती ही नहीं है।

ऐसे सम्पन्न जीवन को जीते हुए व्यक्ति के चिन्तन में श्रेष्ठ मनोरथ आते हैं तब वह कामना पूर्ति के लिए विविध प्रयत्न करता है जिसमें गृहस्थ सुख, राष्ट्रचिन्तन, सामाजिक हित इत्यादि-इत्यादि श्रेष्ठ तत्त्व आते हैं। धर्म से आरम्भ होने वाली जीवन शैली में ''काम'' विकार नहीं है वह दिव्यता का बोधक है। वहीं यदि स्वतंत्र रूप से कामना चिन्तन में भी आती है तो व्यभिचाररूपी पुत्र को साथ लाती है। तभी कहा गया है श्रेष्ठ काम से मोक्ष का मार्ग स्वतः प्रशस्त होता है। धर्म-अर्थ और काम तक मानवीय प्रयत्न है, आगे का मार्ग परमात्मा का अनुग्रह दिखाता है।

प्रश्न ये है कि क्या ये मार्ग बिना प्रकाश के दिखेगा ? हाँ, इस प्रकाश को उत्पन्न करने की क्षमता भारत के कण-कण में है जिसका निरूपण वेदों ने, उपनिषदों ने, पुराणों ने, एवं स्मृति ग्रन्थों ने किया है इन मौलिक ग्रन्थों के बोध हेतु संस्कृत भाषा का ज्ञान आवश्यक है। आवश्यकता इस ज्ञान को तथा सनातन सोच को परिष्कृत करने की है। संस्कृत का विषयेण अध्ययन हो इससे ज्यादा जरूरत है भाषागत अध्ययन की। वो भी श्रेष्ठग्रन्थों के माध्यम से। इन ग्रन्थों का अध्ययन करने से भाषा का ज्ञान तो होगा ही साथ में हम अपने ऋषियों के विचारों से भी अवगत होंगे।

तभी हम स्वाभिमान से जीना सीखेंगे। हमें भारतीय होने पर गर्व महसूस होगा। स्व संस्कृति से स्नेह ही परकीयों के मोह को समाप्त करेगा, भाषा, भूषा, भोजन, भवन एवं भजन ये तत्त्व जब अपने होंगे तो भारत में पुण्य प्रसून खिलेगा, उस प्रसून की सुगन्ध से सुवासित हो सम्पूर्ण विश्व भ्रमर बन भारतमाता के चरणों में ही अपना स्थान खोजेगा।
आईये! हम मिलकर एक बार इच्छा तो करें, संकल्प लें, प्रयत्न करें, तब समन्वित रूप प्रकट होगा तो जगदीश्वर अभिनव भारत की इस वृहद् संकल्पना को स्वयं साकार करेंगे।

''उपैतु मां देवसख कीर्तिश्च मणिना सह प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन कीर्तिमृद्धिं ददातु मे।''

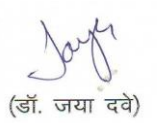

डॉ. जया दवे
अध्यक्ष (राज्यमंत्री)
राजस्थान संस्कृत अकादमी, जयपुर

।।ॐ।।

अभिनव भारत : संकल्पना एवं स्वरूप
संगोष्ठी की प्रस्तावना

वासुदेव प्रजापति
सह संयोजक, संगोष्ठी

भारत का वैभवशाली अतीत :-हमारा देश सृष्टि का आदि देश है, यह सृष्टि के आरम्भकाल से ही ज्ञान की साधना में रत रहा है। इसीलिए इसका नाम भारत है। यहाँ के ऋषि-मुनियों ने अन्तिम सत्य की खोज की और पाया कि इस सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में एक चिरन्तन सत्ता 'आत्मा' है, वह सबमें व्याप्त है। यह भौतिक जगत् उस आत्मतत्त्व की अभिव्यक्ति मात्र है। आधुनिक विज्ञान भी इसी सत्य के निकट पहुँच रहा है। अध्यात्म के साथ-साथ भारत ने समाज जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में ऊँचाइयों को छुआ है।

अपने श्रेष्ठतम तत्त्वज्ञान और उसके प्रकाश में विकसित हुई संस्कृति के कारण ही भारत प्राचीन काल में 'विश्वगुरू' की भूमिका निभाने में सक्षम रहा। विगत कुछ शताब्दियों के बाह्य आक्रमणों के कारण विश्व को मार्गदर्शन देने की भारत की क्षमता समाप्त हुई है। विशेष रूप से अंग्रेजों के आक्रमण ने इस क्षमता को नष्ट किया है।

रोग का सही निदान :- जिस प्रकार एक सफल चिकित्सक पहले रोग की सही पहचान करता है, फिर उसके आधार पर उपचार करता है। ठीक उसी प्रकार अभिनव भारत के निर्माण की बात करने से पूर्व हमारे लिए यह जानना नितान्त आवश्यक है कि अंग्रेजों ने हमारी विश्व को मार्गदर्शन देने की क्षमता को कैसे समाप्त किया ?

अंग्रेज हमारे देश में आये तो लूट के लिए थे, परन्तु उन्होंने लूट को व्यापार का जामा पहना दिया। जब व्यापार करने में बाधाएँ आने लगी तो उन्होंने राज्य हथियाने शुरू किये, और एक दिन देश के शासक बन गये। उनका दूसरा उद्देश्य था, ईसाईकरण का। ईसाई मिशनरियों ने वनवासी, गिरिवासी और निर्धन भोली भाली प्रजा को सेवा के बहाने धर्मान्तरित करना प्रारम्भ किया। और उनका तीसरा उद्देश्य था भारत का अंग्रेजीकरण करना। अंग्रेजीकरण के लिए उन्होंने अंग्रेजी शिक्षा को माध्यम बनाया। इसमें वे यशस्वी भी हुए।

अंगेजी शिक्षा प्रारम्भ करने से पूर्व ही उनके ध्यान में यह बात आ गई थी कि अगर वैदिक साहित्य का अध्ययन -अध्यापन इसी तरह चलता रहा तो बाइबिल में बताया गया सृष्टि निर्माण का समय जो 4004 ई.पूर्व बताया है वह गलत सिद्ध हो जायेगा, क्योंकि हिन्दू धर्म ग्रन्थ सृष्टि निर्माण का समय - **'एक वृन्दः सप्तनवतिकोटीः नवविंशति लक्षः नव चत्वारिंशत सहस्र विंशत्यशततमे सृष्टि संवत्सरे'** बताते हैं। अर्थात् सृष्टि की उत्पत्ति 1,97,29,49,120 वर्ष पूर्व हुई थी। इसी प्रकार बाइबिल में व्यक्त विचार ही सर्वश्रेष्ठ विचार है। यह मान्यता भी निर्मूल सिद्ध होने वाली थी। इसीलिए उन्होंने ऐसे लोगों की एक फोज खड़ी की जो भारतीय साहित्य और इतिहास की प्राचीनता, श्रेष्ठता व गहनता का विरोध करने लगीं। यूरोपीय लेखकों ने तीन प्रकार के कार्यों से भारतीय साहित्य, इतिहास व संस्कृति को नष्ट करने का प्रयत्न किया -

1. संस्कृत ग्रन्थों का अनुवाद कर उनके अर्थों को विकृत करना। इसके आधार स्तम्भ बने, मेक्समूलर।
2. भारतीय इतिहास की प्राचीनता को नकार कर, आधुनिक इतिहास के नाम पर भारतीय इतिहास को विकृत करना। इसका आधार बना जेम्स मिल।
3. उपर्युक्त दोनों कार्यों को शिक्षा में जोड़कर समूची पीढ़ी को भारतीयता से काटने की व्यवस्था अंग्रेजी शिक्षा के द्वारा की गई ओर यह कार्य किया, मैकाले ने।

मेक्समूलर, मिल व मैकाले तीनों ही भारत विरोधी थे। मेक्समूलर जर्मनी का रहने वाला 28 वर्षीय पी. एच.डी. धारी नवयुवक था। मैकाले ने इसे वेदों का विकृत अनुवाद करने में लगाया। मेक्समूलर ने अपनी पत्नी को पत्र में स्पष्ट लिखा कि मैं हिन्दुओं के धर्मग्रन्थ वेदों को उखाड़ फेंकने के कार्य में लगा हूँ और साथ में यह सिद्ध कर रहा हूँ कि 'बाईबिल श्रेष्ठ है और वेद निष्कृष्ट हैं। भारतीय इतिहास को विकृत करने का कार्य किया, जेम्स मिल ने। मिल ने 'ब्रिटिश भारत का इतिहास' नामक ग्रन्थ लिखा। भारत आने वाले प्रत्येक अंग्रेज के लिए इस ग्रन्थ को पढ़ना अनिवार्य था। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि मिल स्वयं कभी भी भारत नहीं आया, इंग्लैण्ड में भी किसी भारतीय से नहीं मिला, उसने कभी कोई भारतीय ग्रन्थ नहीं पढ़ा और वह किसी भारतीय भाषा से परिचित भी नहीं था। ऐसे व्यक्ति ने भारत और यहाँ की संस्कृति का इतिहास लिखा। अब आप ही अनुमान लगा लें कि वह कितना

प्रामाणिक होगा? और तीसरा, अंग्रेजी शिक्षा लागू करने वाला था मैकाले स्वयं। मैकाले तो दिलो-दिमाग से भारत विरोधी था। वह भारतीयों से घृणा करता था। उसका मानना था कि इंग्लैण्ड की प्राथमिक शाला की लाइब्रेरी में रखी दो पुस्तकें भी भारत के सम्पूर्ण साहित्य से अधिक मूल्यवान हैं। ऐसा व्यक्ति 1834 ई. में देश का शिक्षा प्रमुख बनकर भारत आया, और 1835 में उसने अंग्रेजी शिक्षा प्रारम्भ की। उसका उद्देश्य था कि भारत में एक ऐसी पीढ़ी तैयार की जाय जो -'Indian in blood and colour, but English in tests, in opinion, in morals and intelect.' अर्थात् रंग और रूप में भारतीय परन्तु अभिरूचि, धारणा, नैतिक आदर्श तथा वैचारिकता में पूरी तरह अंग्रेज बन जाय। मैकाले इसमें सफल हुआ। भारत का अंग्रेजी पढ़ा लिखा व्यक्ति पूरी तरह अंग्रेज बन गया। हमारे प्रथम प्रधानमंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू उसके पक्के उदाहरण हैं। उन्होंने अमेरिका के राजदूत जॉन गेलब्रेथ से एक बार कहा था - ''मैं भारत पर शासन करने वाला अन्तिम अंग्रेज हूँ।'' अर्थात् नेहरूजी स्वयं को पक्का अंग्रेज मानते थे।

मंत्र विप्लव :- अंग्रेजों ने इस तरह भारतीयों की बुद्धि को भ्रष्ट कर दिया। वैचारिक स्पष्टता के स्थान पर वैचारिक भ्रष्टता अधिक खतरनाक होती है। यही बात महात्मा विदुर धृतराष्ट्र को इस उदाहरण से समझाते हैं - **'एकं विष रसोहन्ति, शस्त्रेणैकैव हन्यते'** हे राजन ! अगर विष की एक बून्द किसी को दी जाय, तो जिसे दी गई है वह एक ही व्यक्ति मरेगा। अगर धनुष से एक तीर छोड़ा गया तो वह तीर जिसे लगेगा वहीं एक व्यक्ति मरेगा, किन्तु जब मंत्र विप्लव होता है, बुद्धि भ्रमित कर दी जाती है तो सम्पूर्ण राज्य का, राष्ट्र का सत्यानाश हो जाता है - **'राजानम् हन्ति मंत्र विप्लवः'**। अर्थात् मंत्र विप्लव होने से समूचा राष्ट्र ही बदल जाता है। अंग्रेजों ने भारत में मंत्र विप्लव किया। हम कौन हैं किनकी सन्तान हैं, हमारा इतिहास क्या है ? यह सबकुछ भूले गये, सम्पूर्ण राष्ट्र आत्मविस्मृत हो कर हीनताबोध से ग्रस्त हो गया। यही हमारी बीमारी का मूल है, इसे दूर करना है। इसे दूर किये बिना हम अभिनव भारत का निर्माण नहीं कर पायेंगे। जिस शिक्षा रूपी शस्त्र को माध्यम बनाकर अंग्रेजों ने हमारा बुद्धि विभ्रम किया, वैचारिक भ्रष्टता निर्माण की, हमें भारतीय शिक्षा को माध्यम बनाकर फिर से भारत में भारतीयता लानी होगी।

हमें अपने राष्ट्र पर गर्व :- आत्मविस्मृत होने के बाद भी हमें अपने राष्ट्रपर गर्व है। गर्व इसलिए है कि राष्ट्र के साथ हमारा नाता मात्र भू भाग का नहीं है, हमारा नाता तो माता और पुत्र का है। भारत हमारी माँ है, हम उसके पुत्र हैं। पुत्र होने के नाते उसकी रक्षा करना ओर सेवा करना हमारा कर्तव्य है। राष्ट्र कवि मैथिलीशरणगुप्त भी इन पंक्तियों में यही भाव भरते हैं :-

जिसको न निज देश और निज जाति का अभिमान है।
वह नर नहीं, नर पशु निरा और मृतक समान है ।।

माता की सेवा करने का एक रूप यह भी है कि हम माता के गत वैभव को पुनः प्राप्त करवाये। अपने देश भारत को अभिनव भारत बनायें। यही इस गोष्ठी का हेतु भी है।

हमारे समक्ष चुनौतियाँ :- जब हम अभिनव भारत के निर्माण की ओर अग्रसर होंगे तो अनेक चुनौतियाँ हमारे समक्ष मुहँ फैलाये खड़ी होंगी, उनमें ये प्रमुख हैं -

पश्चिम की भौतिकवादी जीवन दृष्टि - इस दृष्टि के कारण व्यक्ति केवल भौतिक संसाधनों में सुख ढूँढ़ता है, जो उसे कभी नहीं मिलता।

मनुष्य केन्द्री रचना - पश्चिम यह मानता है कि सृष्टि रचना के समय भगवान ने सबसे अन्त में मनुष्य को बनाया और उसे अपने पास बुलाकर कहा तुम मेरे श्रेष्ठ सृजन हो। मैं तुम पर प्रसन्न हूँ। यह सारी सृष्टि तुम्हारे लिए है, तुम उसका यथेष्ठ उपभोग करो। तबसे पश्चिमी विचारधारा वाला मनुष्य सृष्टि का उपभोग कर रहा है, वह स्वयं को सृष्टि का मालिक मानता है। उसी में से अनेक संकट खड़े हुए हैं।

स्त्री के प्रति देखने का दृष्टिकोण - 20 वीं शताब्दी के प्रारम्भ के वर्षों तक यूरोप में ऐसा माना जाता था कि स्त्री में आत्मा नहीं है, स्त्री एक पदार्थ है और अन्य पदार्थों की भाँति वह भी पुरुष के लिए भोग्या है।

अर्थपराणयण जीवन रचना - पश्चिम के व्यक्ति को अनगिनत कामनाओं की पूर्ति के लिए असंख्य पदार्थ चाहिए। इन पदार्थों को प्राप्त करने हेतु अर्थ चाहिए। अतः कामना पूर्ति और अर्थ प्राप्ति जीवन के केन्द्र बन जाते हैं।
भारत के व्यक्ति ने जब से पश्चिम की भौतिकवादी दृष्टि अपनाली है, तबसे उसका व्यवहार भी ऐसा ही हो गया है। अतः अभिनव भारत में इन सभी चुनौतियों का हल निकालना होगा।

राष्ट्र के समक्ष विवादित प्रश्न :- आज हमारा राष्ट्र अनेक ज्वलन्त प्रश्नों से जूझ रहा है, उनमें प्रमुख प्रश्न ये हैं -

राष्ट्र और राष्ट्रीयता का प्रश्न :- पश्चिम की और हमारी राष्ट्र की अवधारणा में मूलभूत अन्तर है। पश्चिमी जगत् में स्टेट अर्थात् नेशन का जन्म, ''सामाजिक समझौता का सिद्धान्त (Social Contract Theory) के आधार पर

हुआ है, जबकि भारत में राष्ट्र निर्माण का आधार चिरन्तर सत्य की खोज है। अथर्ववेद का श्लोक कहता है -

''भद्रं इच्छन्त ऋषयः स्वर्विदः,
तपो दीक्षां उपसेदुः अग्रे।
ततो राष्ट्रं बलं ओजश्च जातम्,
तस्मै देवा उपसन्नमन्तु।। ''

(आत्मज्ञानी ऋषियों ने जगत् का कल्याण करने की इच्छा से, सृष्टि के आरम्भ में जो दीक्षा लेकर तप किया, उससे राष्ट्र का निर्माण हुआ तथा राष्ट्र का बल और ओज भी प्रकट हुआ। इसलिए सब लोग इस राष्ट्र के समक्ष नतमस्तक होकर इसकी सेवा करें।)

पश्चिम के षड्यंत्र में फँसकर अनेक भारतीय भी भारत को सनातन राष्ट्र न मानकर उपमहाद्वीप मानते हैं, और इसकी एकता व अखण्डता पर मूलाघात करते हैं।

राष्ट्रीयता का प्रश्न तो इससे भी अधिक संवेदनशील है। विश्व में शायद ही कोई ऐसा देश होगा, जहाँ राष्ट्रीयता पर विवाद हो। राष्ट्रीयता की सरलतम परिभाषा यही है कि जो इस देश को अपनी माँ मानता हो और भारतमाता की जय बोलता हो, वह भारतीय है, राष्ट्रीय है। परन्तु देश में एक ऐसा वर्ग भी है, जो भारत को माँ नहीं मानता, भारतमाता की जय नहीं बोलता अपितु अपना मालिकाना हक जमाता है। मैंने एक टी.वी. चैनल पर वर्ग विशेष के व्यक्ति को कहते हुए सुना। ''हम इस देश के वफादार नहीं हैं, वफादार तो कुत्ता होता है। हम कुत्ते नहीं हैं, हम तो इस देश के मालिक हैं, मालिक''। राष्ट्रीयता के समान ही राष्ट्रभाषा, राष्ट्रगीत व राष्ट्रध्वज के विषय भी उलझा रखे हैं। हमें अभिनव भारत में इन्हें भी सुलझाना होगा।

धर्म का विषय भी उतना ही विकट है। हम धर्म को पूजा पद्धति व कर्मकाण्ड से जोड़कर पंथ या सम्प्रदाय के अर्थ में प्रयुक्त करते हैं, और धर्म का नाम लेते ही साम्प्रदायिकता का शोर मचाना शुरू कर देते हैं। इसलिए अभिनव भारत में धर्म का स्थान क्या होगा ? धर्म निरपेक्षता किस अर्थ में होगी ? जैसे प्रश्नों पर भी यह सदन सम्यक् विचार करेगा।

अभिनव शब्द में तात्पर्य :- यहाँ एक बिन्दु की ओर ध्यान आकृष्ट करना चाहूँगा। गोष्ठी के विषय में जो 'अभिनव' शब्द आया है, उसका हम केवल शाब्दिक अर्थ न लें। भाव को पकड़ें, 'विशेष' के अर्थ में लें, हम जैसा भारत चाहते हैं, वैसा भारत। नया भारत नहीं। क्योंकि भारत तो चिरपुरातन राष्ट्र है। हम इस राष्ट्र का पुनः उत्थान कर रहे हैं। अभिनव भारत के निर्माण का यही भाव है।

राष्ट्र की सत्ताएँ :- किसी भी राष्ट्र में चार प्रमुख सत्ताएँ होती हैं। राज्य सत्ता, अर्थ सत्ता, शिक्षा सत्ता एवं धर्म सत्ता। पश्चिम की अर्थ प्रधान जीवन रचना के कारण आज सबसे पहले व सबसे प्रमुख स्थान अर्थ सत्ता का है, अर्थ सत्ता के बल से राज्य सत्ता चलती है, राज्य के नियन्त्रण में शिक्षा चलती है और आज की व्यवस्था में धर्म को कोई स्थान नहीं हैं। जबकि भारत में धर्म सत्ता सबसे ऊपर थी, शिक्षा धर्म सिखाती थी इसलिए उसका दूसरा स्थान था। शिक्षा के मार्गदर्शन में राज्य चलता था और राज्य के नियन्त्रण में अर्थव्यवहार चलता था। अभिनव भारत में किस सत्ता का कौनसा स्थान रहना चाहिए, इस पर भी सार्थक चर्चा अपेक्षित है।

युगानुकूल पुनर्रचना :- हमारे देश में नव निर्माण की एक निश्चित व्यवस्था है। सर्वोपरि स्थान तत्त्व का है। क्योंकि तत्त्व सनातन है, कभी बदलता नहीं। प्रत्येक युग में सत्य, सत्य ही रहता है, अंतिम विजय सत्य की ही होती है। तत्त्व के अनुसार व्यवहार होता है, व्यवहार को सुगम बनाने के लिए व्यवस्था की जाती है, व्यवस्था के लिए रचना बनती है और रचनानुसार निर्माण होता है। तत्त्व तो प्रत्येक युग में वही रहता है, हमें तो युग के अनुसार व्यवहार, व्यवस्था, रचना और निर्माण ही बदलने होते हैं। यहाँ एक बात और ध्यान रखने की है। युगानुकूल व्यवहार व व्यवस्था देशानुकूल बनाकर अपनानी चाहिए अगर देशानुकूल नहीं हो सकती तो त्याग देनी चाहिए। अतः अनेक बार हमें युगानुकूल बनना पड़ता है तो अनेक बार हमें युग को देशानुकूल बनाना पड़ता है।

भारत की वैश्विक भूमिका :- भारत ने कभी अपना विचार नहीं किया, सदैव जड़-चेतन का विचार किया है। भारत का विचार ही विश्वकल्याण का विचार है। भारत ने सम्पूर्ण वसुधा को अपना परिवार माना है। इसलिए विश्व के संदर्भ में भारत की एक विशेष भूमिका है। महर्षि अरविन्द ने कहा है कि - 'प्रत्येक चतुर्युगी में परमात्मा किसी एक देश को निमित्त बनाकर अपनी योजना साकार करवाता है। मैं यह पूर्ण विश्वास से कहता हूँ कि कम से कम इस चतुर्युगी में वह देश और कोई नहीं भारत ही है।'' हम सभी चाहेंगे कि हमारा अभिनव भारत अपनी इस विशेष भूमिका को निभाने में समर्थ हो। अभिनव भारत विश्व को नेतृत्व प्रदान करते हुए वर्तमान विश्व को अज्ञान, भुखमरी, कट्टरता, जिहादी आतंकवाद जैसे वैश्विक संकटों से मुक्ति दिलाकर मानव मात्र के जीवन को सुखी व समृद्ध बनायें।

उपसंहार :- गोष्ठी का विषय फलक अति व्यापक है। इसलिए दो दिन की गोष्ठी का आयोजन किया गया है। इन दो दिनों में 8 समयावधि में कुल 12 सत्रों की रचना की गई है। उद्घाटन एवं समापन को छोड़कर शेष बचे हुए आठ तकनीकी सत्रों में गोष्ठी के आठों उप विषय-अभिनव भारत एवं शिक्षा, अभिनव भारत एवं धर्म संस्कृति, अभिनव भारत एवं कृषि, अभिनव भारत एवं एवं विज्ञान व तकनीक, अभिनव भारत एवं वाणिज्य एवं उद्योग, अभिनव भारत एवं प्राकृतिक संसाधन एवं पर्यावरण, अभिनव भारत एवं सामाजिक व्यवस्था, अभिनव भारत एवं सुरक्षा चलेंगे। दूसरे दिन मध्याह्न भोजनोपरान्त पत्र वाचन के समानान्तर सत्र रहेंगे।

मैं परमपितापरमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि वे हमें सार्थक चर्चा करने हेतु सद्बुद्धि दें और इस गोष्ठी को उत्तरोत्तर आगे बढ़ाते हुए पूर्णता प्रदान करें।

इति शुभम्

हमारी उन्नत ज्ञान परम्परा से अनुप्राणित हो शिक्षा

भगवती प्रकाश शर्मा
कुलपति, पेसेफिक विश्वविद्यालय, उदयपुर

प्राचीन भारतीय वाङ्मय में उपलब्ध आधुनिक विज्ञान, प्रौद्योगिकी, सामाजिक विज्ञान व मानविकी आदि के ज्ञान की सामयिक सन्दर्भों में व्याख्या, निर्वचन व उसके क्रमबद्ध संकलन और इनका हमारी शिक्षा में समावेश आवश्यक है। चारों वेद, षड वेदांग, पुराण, उपपुराण, उपनिषद, षट् दर्शन, आरण्यक, धर्मशास्त्र, संहिताओं, सूत्र ग्रन्थों, इतिवृत्तों (यथा वाल्मीकि रामायण, महाभारत आदि), एवं संस्कृत साहित्य के अन्य प्रकाशित ग्रन्थों के अतिरिक्त विविध अभिलेखागारों में संगृहीत 1.2 करोड़ अपठित पाण्डुलिपियों में अथाह ज्ञान संगृहीत है। हमारे इस प्राचीन वाङ्मय की सार्थकता व महत्ता को स्पष्ट करने हेतु यहाँ पर कुछ सरल व सुलभ उदाहरणों को उद्धृत किया जा रहा है –

यजुर्वेद में हृदयाग्र में विद्युत स्पन्दन का उल्लेख : आधुनिक चिकित्सा शास्त्र के अनुसार हृदय के स्पन्दनों की गति (नाड़ी की गति) 72 प्रति मिनट से न्यून हो कर 30-45 प्रति मिनट हो जाने पर एक सिल्वर आयन बैटरी उसके सीने में त्वचा के नीचे लगाकर उससे, एक इलेक्ट्राड जोड़ कर हृदय के आवरण (पेरिकार्डियम) के अन्दर, हृदय के अग्र भाग में स्थापित कर उस इलेक्ट्राड में बैटरी से इतनी विद्युत आपूर्त्ति समायोजित कर दी जाती है कि हृदय (नाड़ी) की गति पूर्ववत् 70 प्रति मिनट हो जाये। यजुर्वेद में हृदय के अग्रभाग में विद्युत को धारण करने की कामना की गयी है। मंत्र में प्रयुक्त शब्द 'अशनि' वैदिक शब्द कोष निघण्टु के अनुसार विद्युत का पर्याय है।

सुश्रुत द्वारा उन्नत शल्य चिकित्सा का विवेचन : सुश्रुत द्वारा 4000 वर्ष पूर्व रचित, संहिता ग्रन्थ में 300 से अधिक शल्य प्रक्रियाओं, 120 से अधिक शल्य चिकित्सा यंत्रों, विविध प्रकार की शल्य चिकित्सा का वर्गीकरण व कई अध्यायों में उसके प्रशिक्षण का सटीक विवरण दिया गया है। सुश्रुत को यह सम्पूर्ण ज्ञान धन्वन्तरि व अन्य उनके पूर्ववर्ती आचार्यों से परम्परागत प्राप्त हुआ है।

ऋग्वेद में प्रकाश की गति की गणना : ऋग्वेद से उद्भूत मंत्र, जिसे आठवीं सदी में आचार्य शंकर ने व 15वीं सदी में सायणाचार्य ने उद्धृत किया है, उस में प्रकाश को एक निमेष (0.216 सेकण्ड) के आधे भाग अर्थात् 0.108 सेकण्ड में 2202 योजन गमन करने वाला बतलाया है, जिससे प्रकाश की गति 1,86,300 मील प्रति सैकण्ड निकलती है। यह 1676 में रीमर द्वारा की गयी गणना से बहुत पहले से सूत्रबद्ध ही थी।

न्यूटन से कई शताब्दी पूर्व गुरूत्वाकर्षण के सिद्धान्त व गति के सिद्धान्तों का प्रतिपादन : न्यूटन द्वारा गुरूत्वाकर्षण के सिद्धान्त के प्रतिपादन के पूर्व वराहमिहिर (505-587) व ब्रह्मगुप्त (598-670 ई.) ने ब्राह्मस्फुट सिद्धान्त में एवं भास्कराचार्य (1114-1185 ई.) ने सिद्धान्त शिरोमणि व लीलावती नामक ग्रन्थ में व उनके द्वारा पुनः सम्पादित और भी प्राचीन ग्रंथ सूर्य सिद्धान्त में इसका वर्णन किया है। मूल सूर्य सिद्धान्त का उद्गम (1000 ई.पू.) से पहले का माना गया है। सूर्य सिद्धान्त में भास्कराचार्य द्वारा ''गुरूत्वाकर्षण शक्ति ''शब्द युग्म के प्रयोग के साथ कर उसे समझाया गया है।

इसी प्रकार वाल्मीकि रामायण के सुन्दरकाण्ड में हनुमान जी द्वारा लंका गमन हेतु सुदीर्घ छलांग लगाते समय, उन्होंने विचार किया कि वे जितने वेग-पूर्वक छलांग लगाएंगे, उसकी प्रतिक्रिया में उतने ही प्रबल वेग से उस स्थान की धरती पीछे को धसकेगी, और इसलिए उन्होंने एक ऊँचे पर्वत पर चढ़कर छलांग लगाने का निर्णय लिया। वाल्मीकि जी रामायण में लिखते हैं कि उनके छलांग के वेग की प्रतिक्रियावश वह पर्वत विदीर्ण हो गया व धरती के समतल हो गया। यह न्यूटन के ''गति के तीसरे सिद्धान्त'' 'क्रिया के समानुपात में (उसकी विलोम) दिशा में प्रतिक्रिया होती है'' का उदाहरण है। ऐसे अनगिनत प्रत्यक्ष व परोक्ष ज्ञान विज्ञान के उद्धरण रामायण व अन्य ग्रन्थों में है।

वाल्मीकि रामायण की प्रागैतिहासिकता : वाल्मीकि रामायण का काल त्रेता युग में था। इसका आरम्भ 21,25,120 वर्ष एवं समाप्ति 8,69,120 वर्ष पूर्व मानी गई है। इसमें उस युग में पाये जाने वाले 4 दाँत वाले हाथियों का जो वर्णन आता है, वे आधुनिक आनुवांशिकीय अनुसंधानों के अनुसार 4 करोड़ वर्षों से पृथ्वी पर पाये जाते रहे हैं, और 10 लाख वर्ष पूर्व पूरी तरह विलुप्त हो गये। आज उनके 10 लाख वर्षों से पुराने जीवाश्म अर्थात् अस्थि अवशेष या फॉसिल्स ही पाये जाते हैं। नासा व अन्य वैज्ञानिकों द्वारा भी रामसेतु को 17.5 लाख वर्ष पुरातन व

मानव निर्मित बतलाया जा रहा है। अतएव इतिहास में ऐसे सभी स्रोतों का समावेश भी आवश्यक है। रामायणकालीन यह दस लाख वर्ष से भी पुरातन हमारी सभ्यता तब कितनी उन्नत थी जहाँ सड़कों पर भी बर्फ से शीतल किये हुये जल के छिड़काव (हिमशीतेन वारिणः) की परम्परा रही है। अर्थात् तब बर्फ का महानुमाप उत्पादन होता था व बर्फ से शीतलीकृत जल के छिड़काव की परम्परा आज भी नहीं है, वह उस काल में थी।

भू-चुम्बकत्व का उत्तर दिशा में सिर रखने पर प्रभाव : न्यूरोफिजीशियन्स का कथन है कि पृथ्वी के भू-चुम्बकत्व (geo-magnetism) के कारण, नित्य उत्तर दिशा में सिर रख कर सोने से मस्तिष्क की कार्य प्रणाली पर प्रतिकूल प्रभाव होता है। मस्तिष्क के ई.ई.जी अर्थात् EEG (एनसिफेलो इलेक्ट्रा ग्राफ) के अंकनों के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला गया है। विज्ञान ने अब उत्तर दिशा में सिर रख कर सोने के परिणाम का पता लगाया है। हमारे पुराणों व वास्तु ग्रन्थों में चारों दिशाओं में सिर रखने के परिणामों का विवेचन करते हुए भूल कर भी उत्तर में सिर नहीं करने का निर्देश किया है। विश्वकर्मा प्रकाश के अनुसार पूर्व में सिर रखने से विद्याध्ययन में रूचि बढ़ती है। दक्षिण में धनार्जन की ओर रूचि बढ़ती है। पश्चिम में सिर रखने से चिंता में वृद्धि होती है व उत्तर में आयुक्षीण होती है। भूलकर भी उत्तर में सिर नहीं रखना चाहिए।

योग की वैज्ञानिकता पर अनुसंधान : विविध योग क्रियाओं यथा आसन, प्राणायाम, मुद्राओं, बन्ध आदि के शरीर व स्वास्थ्य पर होने वाले परिणामों पर भारत के बाहर विश्व के सौ से अधिक विश्वविद्यालयों में वृहद् स्तर पर सुदीर्घ अनुसंधान हो रहे हैं। नोबल पुरस्कार विजेता एलिजाबेथ ब्लैकबर्न ने तो पाया कि केवल 90 दिन तक, प्रतिदिन 12 मिनट गहरे श्वसन के अभ्यास से तनावजन्य वृद्धावस्था से सुरक्षा प्रदानकर्त्ता टेलोमरेज के आकार में 43 प्रतिशत की अभिवृद्धि हो गयी।

ऋग्वेद में आधुनिक व्यावसायिक प्रबन्ध के सूत्र : ऋग्वेद में आज के कम्पनियों के पॉर्टफोलियों प्रबन्ध जैसे प्रबन्ध के अनेक श्लोक हैं, जिनमें विश्व में अनेक स्थानों पर इष्ट साधन करने वाली पूंजी (इष्टका) से दैनिक दोनों समय धेनु को दुहने की भांति लाभार्जन आदि का विवेचन है यथा:

इमा मे ऽ अग्न इष्टका धेनवः सन्त्वेका च दशं च दशं च शतं च शतं च।।1।।
सहस्त्रैं च सहस्त्रैं चायुतं चायुतं च नियुतैं च नियुतैं च ।।2।।
अर्बुदं च न्यर्बुदं च समुद्रश्च मध्यं चान्तश्च परार्धश्च ।
एता में अग्न इष्टका धेनवः सन्त्वमुत्रामुष्मिँल्लोके ।।3।।

उपर्युक्त श्लोकों के अनुसार एक से अधिक स्थानों पर निवेशित पूंजी से संचालित व्यवसाय से उसी प्रकार अनवरत, नियमित लाभ होवे, जैसे गौ प्रतिदिन नियमित दोनों समय दूध देती है। वह लाभ उत्तरोत्तर बढ़कर दस गुना, सौ गुना ..... अरब, खरब, नील, पद्म व शंख गुना होवे। यह मंत्र उन्नत व्यवसाय का द्योतक होने के साथ - साथ हजारों वर्ष पूर्व हमारे यहाँ दाशमिक प्रणाली के उपयोग की भी जानकारी कराता है। यहाँ पर, जिस प्रकार सतत व निर्बाध लाभ देने वाले पूंजी को धेनु कहा है, उसी प्रकार अमेरिकी बास्टन कन्सल्टेंसी ग्रुप पोर्टफोलियो प्रबन्ध में कम्पनियों का वर्गीकरण - केश काऊ, स्टार, डॉग आदि नामों का प्रयोग करता है।

वैदिक काल में अर्थव्यवस्था इतनी उन्नत थी कि तब केवल धन सम्पदा के विविध प्रकारों व उनके लिये आज से अधिक पर्याय थे। धेनु, इष्टका, ब्रह्म, वेद, वृद्धि, वित्त, बंधु, द्युम्न, वसु, भोग, श्रव, गयः, क्षत्र, मीढु, मेधा, श्वात्र, वैध या लब्धव्य, रेक्ण, द्रविण, राधः, रयि, वरिवः, वृत, वृत्र आदि इनमें से दो की यहाँ व्याख्या की जा रही है -

धेनु : व्यवसाय में सहज व स्थिर लाभार्जन कराने वाला धन, द्रव्य एवं व्यवहार्य धन ये सब 'धेन्' संज्ञक है। अतः जिस मूलभूत पूंजी से अर्जन होता है वह धेनु संज्ञक है। आज भी हम शेअर बाजार में तेजड़िया को बुल (Bull) अर्थात् बैल या साण्ड व मन्दाड़िया को बीअर अर्थात् भालू (Bear) कहते हैं।

इष्टका : व्यवसाय में निवेशित मूल पूंजी का नाम 'इष्टका' (Capital Employed) है। अपने व्यापारिक इष्ट साधन के लिए इसका प्रयोग होता है। जैसा कि- 'इमा मे अग्न इष्टका धेनवः' (यजुर्वेद।17 2) में दोनों शब्दों का प्रयोग हुआ है।

ऋग्वेद में सौ चप्पुओं वाले जलयानों (शतरित्र) से सामुद्रिक व्यापार के वर्णन प्राचीन काल में भारत में एक उन्नत अर्थव्यवस्था का संकेत करते हैं। इस प्रकार अनेक सहस्राब्दियों पूर्व हमारे यहाँ उन्नत आर्थिक व व्यावसायिक प्रबन्ध विकसित था।

वैदिक काल की उन्नत शासन व्यवस्था, लोकतंत्र व चुनाव आदि : वैदिक काल में आज की भाँति चुनाव एवं चुने हुये राष्ट्राधिपति को पदमुक्त किये जाने के भी पर्याप्त सन्दर्भ हैं। ऋग्वेद के मंत्र क्रमांक 10-173-1 के अनुसार वैदिक युग में भी देश में राष्ट्र के अधिपति के चुनाव होते रहे हैं। इसी मंत्र में इस चुने हुए राष्ट्राधिपति से शासन में स्थायित्व के साथ जनप्रिय बने रहने की अपेक्षा भी की गई

है । यथा - 'आत्वा हर्षिमंतरेधि ध्रुव स्तिष्ठा विचाचलिः विशरत्वा सर्वा वांछतु मात्वधं राष्ट्रमदि भ्रशत्। 'ऋक 10-174-1। भावार्थ - हे राष्ट्र के अधिपति! मैं तुझे चुन कर लाया हूँ। तू सभा के अन्दर आ, स्थिरता रख, चंचल मत बन, घबरा मत, तुझे सब प्रजा चाहे। तेरे द्वारा राज्य पतित नहीं होवें। उक्त मंत्र से यह भी विदित होता है कि राष्ट्राधिपति को संसद जैसी किसी सभा में भी आना पड़ता था। शायद स्थानीय स्वशासन हेतु भी कोई (नगरों / ग्रामों या प्रांतो की) पंचायतें हुआ करती थी। इनसे भी उस चुने हुए राष्ट्राधिपति का अनुमोदन आवश्यक था, ऐसा प्रतीत होता है और ये पंचायतें शायद राष्ट्राधिपति को हटाने में भी सक्षम थीं। इसके अतिरिक्त राष्ट्राधिपति का चुनाव तो प्रत्यक्ष प्रणाली से होता रहा होगा। ऐसा अथर्ववेद में मंत्र क्रमांक 3-4-2 के इन शब्दों की 'देश में बसने वाली प्रजाएं तुझे चुनें।' से प्रतीत होता है। लेकिन, ये ग्राम/नगर/प्रादेशिक पंचायतें विद्वत् परिषदों के रूप में भी होती रही होंगी। ऐसा इस मंत्र के शब्दार्थ से प्रतीत होता है। यथा -

भावार्थ - देश में बसने वाली प्रजाएं शासन के लिए तुझको राष्ट्रपति या प्रतिनिधि चुने। ये विद्वानों की बनी हुई उत्तम मार्गदर्शक, दिव्य पंचदेवी (पंचायतें) तेरा वरण करें अर्थात् अनुमोदन करें। तत्पश्चात् तूं उग्र तेजस्वी व प्रभावशाली दण्ड को न्याय बल के साथ सम्भाल और हमको जीवनोपयोगी धनों एवं अधिकारों का न्यायपूर्वक समान रूप से विभाजन कर।

राष्ट्र का नेतृत्व कैसा हो ? इसका भी निरूपण अथर्ववेद में किया गया है यथा-

'स्वस्तिदा विशान्पति बृत्रहा बिमृधो वशी। वर्षेन्द्रः पुर एतु नः सोमपा अभयंकरः।' अथर्ववेद 1-21-1: ।

इसका अर्थ है (प्रजा का या हमारा) कल्याण करने वाले हिंसा या आतंक का निरोध कर सके ऐसा बलवान सोमपा (अर्थात् ब्रह्मज्ञानी, ऐश्वर्ययुक्त, न्यायप्रिय, यज्ञकर्ता, क्षत्र तेज सम्पन्न व प्राण बल का पान करने वाला) शत्रुओं को नष्ट कर प्रजा को अभय प्रदान करने वाला हमारा नेता बने। **'यौनः पूषन्नथो वृको दुःशेव आदि देशाति। अपस्मतं पथो जहि।** ऋग्वेद । 1-42-2 । भावार्थ - हे पूशन! प्रभो, यदि पापी व दुखदायी हम पर शासन करें, तो उसे हमारे पथ से दूर कर कांटे की भांति उखाड़ कर फेंक दे। इसी प्रकार ऋग्वेद के मंत्र 1-42-3 में परिपंथी, चोर व कुटिल जनों को दूर करने का आग्रह है। इससे यह स्पष्ट होता है कि आज से सहस्राब्दियों पूर्व भी हमारे देश में आज से भी उन्नत लोकतंत्र सुस्थापित था। बौद्ध साहित्य में 2600 वर्ष पूर्व के जिन अनेक गणराज्यों का विस्तृत वर्णन व तैत्तिरीयोपनिषद में जिन शासन पद्धतियों का विवेचन आता है, वह हमारे देश में अति प्राचीन काल में आज से बेहतर उत्तरदायी सुशासन, लोकतंत्र व गणराज्यों के प्रमाण हैं।

बुद्धिमत्ता पूर्ण प्ररचना सिद्धान्त (इण्टैलिजेण्ट डिजाइन थ्योरी) : वैज्ञानिकों का एक वर्ग ब्रह्माण्ड व सभी जीव प्रजातियों को एक बुद्धिमत्तापूर्ण रचना मानता है कि इस अति विशाल व व्यवस्थित रूप से संचालित ब्रह्माण्ड एवं प्रत्येक जीव प्रजाति की रचना बेतरतीब तत्वों के संयोजन से नहीं हो कर अत्यंत बुद्धिमत्तापूर्वक की गयी रचनायें हैं। इन वैज्ञानिकों का प्रथम तर्क है कि ब्रह्माण्ड में अनवरत भ्रमणशील अरबों आकाश गंगायें, प्रत्येक आकाश गंगा में व्यवस्थित रूप से अपनी धुरी पर भ्रमणरत व अपनी-अपनी कक्षा में भ्रमणरत अरबों ग्रहनक्षत्र और उनके भी अपने-अपने सौर मण्डल या नक्षत्र मण्डल सुव्यवस्था के साथ संचालित हो रहे हैं। वह सभी बुद्धिमतापूर्ण की गयी योजना से ही संभव है। इसी प्रकार सभी जीव प्रजातियों के विकास में भी एक सप्रयोजन बुद्धिमत्तापूर्ण योजना ही अन्तर्निहित प्रतीत होती है। DNA से जीवन निर्माण का जो डिजीटल कोड है वह अनियोजित नहीं, सप्रयोजन नियोजित सिद्ध होता है। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के क्रिया-कलापों में और सभी जीव प्रजातियों के जीवन चक्र में एक प्रकार की परिपूर्णता युक्त जटिलता सामने आती है। इन जटिलताओं के अत्यंत स्वल्प अंश को भी निकाल देने पर संपूर्ण तंत्र ढह जाता है। इसे 'Irreducible complexity' का सिद्धांत कहा जाता है। इसी प्रकार ब्रह्माण्ड व सभी जीव प्रजातियों में पाई जाने वाली सारी जटिलताएँ सोद्देश्य या सप्रयोजन हैं। इनमें सारी जटिलताएं निर्देशित हैं, संयोगजन्य नहीं। इस प्रकार की अलघुकरणीय जटिलताओं (जिन्हें कम नहीं किया जा सके, ऐसी जटिलतायें) और सप्रयोजन या निर्देशित जटिलताओं के पीछे बुद्धिमत्तापूर्ण रचना का होना स्वाभाविक है। इस पूरे विषय पर अनेक ग्रंथ रचे गए हैं जो उद्विकास (evolution) के स्थान पर नियोजित सृजन के सिद्धांत का प्रतिपादन करते हैं। इसे इन दिनों 'Creationism in place of evolution' कहा जा रहा है। पाठक इस विषय में लेखक के 'Intelligent Design theory' पर प्रकाशित लेखों का अध्ययन भी कर सकते हैं। हमारे पुराणों के प्रतिपाद्य 5 विषयों में से ''सर्ग'' अर्थात् ''सृष्टि रचना'' के खण्ड में बुद्धिमत्तापूर्ण प्ररचना सिद्धांत (Intelligent Design Theory) में अत्यंत साम्य दिखलाई देता है।

बहुसंख्यक पुरातात्विक व अन्य अनुसन्धान : हमारे गौरव का प्रतिपादन करने वालों का हमारे पाठ्यक्रमों में समावेश ही नहीं है जो किया जाना चाहिये। अनेक पुरातात्विक अनुसंधान भी इस दृष्टि से पठनीय हैं।

तमिलनाडु में कोडूमनाल में उत्खनन में एक प्राचीन 2800 वर्ष पुरानी औद्योगिक नगरी मिली है। वहाँ पर ऐसे Vitrified Crucibles मिले हैं, जिनका उपयोग इस्पात (Steel) बनाने में होता था। वहाँ अत्यन्त उन्नत व स्वल्प कार्बनयुक्त इस्पात (Low Carbon Steel) का उत्पादन होता था। आज चाहे सब कहते हैं कि, विट्रीफाईड टाईल्स का विकास यूरोप में हुआ है। लेकिन, कोडूमनाल में 2800 साल पुराने विट्रीफाइड क्रुसिबल्स ;Vitrified Crucibles) मिलने से भारत में विट्रीफिकेशन प्रक्रिया की प्राचीनता सिद्ध होती हैं। उड़ीसा की भट्टियों में तैयार इस्पात (जंग न लगने वाला) 2000 वर्ष पूर्व भारत की स्टील उत्पादन प्रौद्योगिकी की कहानी कह रहा है। अशोक की लाट कहलाने वाला गरूड़ स्तम्भ-महरौली, दिल्ली में इसका प्रमाण है। कोडूमनाल में 2500 वर्ष पुराना वस्त्र उद्योग, रत्न संवर्द्धन व इस्पात उद्योग हमारे प्राचीन गौरव का प्रमाण हैं। कोडूमनाल में पुरानी सभ्यताओं यथा मिश्र (अरब देश), रोम (इटली) और थाईलैण्ड (दक्षिण-पूर्व एशिया) के सिक्के निकले हैं। ये सिद्ध करते हैं कि, भारत प्राचीन समय से ही समृद्ध एवं दूर देशों से विश्व-व्यापार में व प्रौद्योगिकी विकास में भी अग्रणी रहा है।

कोडूमनाल में मिले अनेक उत्तर भारत के नामपट्टों व अभिलेखों से लगता है कि 2500 वर्ष पूर्व देश में आर्य और द्रविड़ जैसा कोई विभाजन एवं उनमें किसी प्रकार का वैमनस्य नहीं था और इससे आर्यों का बाहर से आगमन व द्रविड़ों पर आक्रमण की कल्पना भी निराधार हो जाती है। कोडूमनाल के उत्खननों में पद्मासन की अवस्था में बैठे नर कंकाल भी मिले हैं, जो वहाँ 2500 वर्ष पूर्व योग की परम्परा का प्रमाण देते हैं। हाल में किये वंशाणु साम्य अर्थात् जीन पूल के अध्ययनों में उत्तर व दक्षिण भारत के लोगों में नस्ल भिन्नता के भी कोई प्रणाम सामने नहीं आते हैं। आर्यों के भारत के बाहर से आने व द्रविड़ों पर आक्रमण और उनके बीच परस्पर अलगाव का मिथक कोडूमनाल में उत्तर व दक्षिण भारत में पारस्परिक लेन-देन के प्रमाणों से भी निर्मूल हो जाता है।

वस्तुतः सिन्धु घाटी सभ्यता का आर्यों का भारत में आगमन पर नष्ट किये जाने के जो मिथ्या विवेचन हैं, वे भी नवीन खोजों के बाद निर्मूल हो गये हैं। उपग्रह के चित्रों व नये पुरातात्विक उत्खननों से निर्विवाद रूप से यह सिद्ध हो गया है कि वह सभ्यता 300 वर्षों के जलवायु प्रकोप के कारण समाप्त हुई है। वहाँ पर जो मिट्टी की अनेक परतें जमा हुई हैं, वे वातावरण में परिवर्तन व जल प्लावन का परिणाम है। वहाँ के भूगर्भिक अनुसंधान यह भी बतलाते हैं कि 4200 से 4000 वर्ष पूर्व मानसून की बरसात का विलोपन भी जन विस्थापन का कारण बताया जा रहा है। सभी ताजा अनुसंधानों से यह निर्विवाद रूप से सिद्ध हो गया है कि वहाँ से कोई आक्रमण जनित विस्थापन नहीं हुआ, जैसा आर्यों के बाहर से आगमन की बात करने वाले इतिहासकार कहते आये हैं। विश्व के अति प्राचीन विश्वविद्यालयों में गिने जाने वाले 1575 में स्थापित लीडेन विश्वविद्यालय में तमिल के चोलराज राजेन्द्र की राज्याज्ञा की एक हजार वर्ष प्राचीन 30 किलो वजन के जो ताम्रपत्र हैं, वे संस्कृत में विष्णु स्तुति से प्रारम्भ होते है और उसमें बाद के वर्णन तमिल भाषा में हैं। इससे यह मिथक भी ध्वस्त हो जाता है। 2014 में चोलराज के राज्यारोहण की सहस्राब्दी में इनका प्रदर्शन किया गया था। स्मरण रहे चोलराज राजेन्द्र ने एक हजार वर्ष पूर्व अपने राज्य का विस्तार बंगाल में गंगा तट से सम्पूर्ण श्रीलंका व म्याँमार सहित सम्पूर्ण दक्षिण पूर्व एशिया तक किया था।

सोलहवीं सदी तक विश्व का सबसे सम्पन्न देश : इस बात की पुष्टि हाल ही में यूरोप से प्रकाशित विश्व के सहस्राब्दीगत आर्थिक इतिहास ग्रन्थ (World Economic History - A Millennium Perspective) में भी कही गयी है। औद्योगिक देशों के संगठन OECD, जिसमें अमेरिका जापान व यूरोप आदि सदस्य हैं, उन के आग्रह पर ब्रिटिश आर्थिक इतिहासकार 'एंगस मेडिसन' ने हाल ही में विश्व का 2000 वर्ष का इतिहास लिखा है। उसमें उसने लिखा है शून्य A.D से लेकर 1000 A.D तक भारत का सकल घरेलू उत्पाद अर्थात् GDP विश्व में सर्वोच्च 33 प्रतिशत था, अर्थात् पूरे विश्व का तृतीयांश उत्पादन भारत में ही होता था। यहाँ तक कि मुगलकालीन अत्याचारों, जजिया आदि के बाद भी 1700 A.D तक भी यह 24 प्रतिशत रहा है। यही आज घटकर लगभग 3 प्रतिशत रह गया है।

समावेशी विकास का अर्थशास्त्र : प्राचीन भारतीय वाङ्मय में विकास की अवधारणा मानव मात्र के योगक्षेम व पूर्ण रोजगार पर आधारित रही है। इसलिये कौटिल्य अर्थशास्त्र में चाणक्य ने मानव मात्र के योगक्षेम पर बल देते हुए लिखा है कि, मनुष्यों को आजीविका प्रदान कर उनके सुख-चैन की व्यवस्था करने का शास्त्र अर्थशास्त्र है। **यथा मुनुष्याणां वृत्तिरर्थः। मनुष्यवती भूमिरित्यर्थः तस्य पृथिव्याये लाभ पालनोपाय शास्त्रमर्थशास्त्रमिति।** अर्थात्

सम्पूर्ण भूमण्डल पर आवासित मानव मात्र के लिये लाभपूर्ण आजीविका से उसके योगक्षेम को सुनिश्चित कर, सबके लिये स्थाई सुखचैन की व्यवस्था का शास्त्र ही अर्थशास्त्र है। ऋग्वेद में परिवार की उत्पादकीय सम्पत्ति को 'पूंजी' कहते हुये इस बात पर सर्वाधिक बल दिया गया है कि परिवार की यह उत्पादकीय सम्पत्ति अर्थात् पूंजी, जो उसके योगक्षेम का अवलम्बन है, कभी भी पृथक नहीं की जाये। अर्थात् 'विकेन्द्रित उत्पादन' को आर्थिक रचना-योजना का आधार माना है। दूसरी ओर आधुनिक अर्थशास्त्र पूंजी की मानवीय सन्दर्भ से विरहित समष्टिगत परिभाषा देता है- 'Produced means of Production is Capital' और आज तो देश का विकास विदेशी पूंजी निवेश-केन्द्रित ही बना दिया गया है। रोजगार व मानव का योगक्षेम लगभग गौण ही है। इसलिये, आज हम रोजगार विहीन आर्थिक वृद्धि (Jobless Growth) के दौर में चले गये हैं। हमारे आर्थिक चिन्तन की सर्वसमावेशी विकास की अवधारणा व विकेन्द्रित उत्पादन व नियोजन का सिद्धान्त इस पर बल देता रहा है कि प्रत्येक व्यक्ति व परिवार का योगक्षेम ही विकास व आर्थिक वृद्धि का आधार होना चाहिये। योगक्षेम शब्द में 'योग' से आशय है 'अप्राप्त की प्राप्ति' (अर्थात् जो अबतक प्राप्त नहीं हुआ है उसकी प्राप्ति) एवं 'क्षेम' का अर्थ है, 'जो प्राप्त हो गया, उसकी सुरक्षा'।

वर्तमान शिक्षा में समावेश आवश्यक

इन उदाहरणों से यह स्पष्ट हो जाता है कि हमारे प्राचीन वाङ्मय में विविध प्रकार का सामयिक महत्त्व का प्रचुर ज्ञान संगृहीत है। आज के प्रत्येक विषय यथा भौतिकी, रसायन विज्ञान, जीव विज्ञान, क्वाण्टम सिद्धान्त, इतिहास, भूविज्ञान, अर्थशास्त्र, राजनीति शास्त्र, समाज शास्त्र, प्रबन्ध, वाणिज्य आदि सभी विषयों पर कई खण्डों में स्वतंत्र ग्रन्थों का लेखन किया जा सकता है। अतएव हमारे प्राचीन वाङ्मय के विधिवत् अध्ययन, अनुसन्धान, लेखन व इनका शिक्षण आज की महती आवश्यकता है। हमारे इतिहास के पुनर्लेखन से लेकर भाषा विज्ञान से क्वांटम मेकेनिक्स पर्यन्त सारे विषयों से सम्बन्धित ज्ञान के संकलन के प्रयास वृहद् स्तर पर आवश्यक हैं।

अभिनव भारत की संकल्पना और शिक्षा

अवनीश भटनागर
राष्ट्रीय मंत्री, विद्याभारती

इस दो दिन की गोष्ठी में हम कल से अभिनव भारत की संकल्पना पर विचार कर रहे हैं। यहाँ विराजमान सभी महानुभाव प्रत्यक्ष अथवा परोक्षरूप से शिक्षा से जुड़े हुए हैं। शिक्षा एक ऐसा पक्ष है, जिससे किसी भी राष्ट्र की प्रगति या अवनति जुड़ी हुई है। राष्ट्र के सर्वांगीण विकास में शिक्षा महात्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। पिछली दो शताब्दियों से शिक्षा के सम्मुख आने वाली घटनाएँ, चुनौतियाँ आज भी अनसुलझी हुई हैं। भारत की स्वतन्त्रता के इकहत्तर बर्षो के बाद भी शिक्षा की स्थिति एवं शिक्षा के स्वरूप की विवेचना एवं व्याख्या करनी पड़ रही है, इसका अर्थ यही है कि शिक्षा के क्षेत्र में हम अबतक असफल रहे हैं।

तीन प्रश्नों की विवेचना :-

आज सामान्य व्यक्ति भी यह कहता है कि हमारे देश में शिक्षा की स्थिति अच्छी नहीं है। यहाँ मैं एक पुस्तक का सन्दर्भ दे रहा हूँ। सन् 2012-13 में यह पुस्तक ''भारत में राष्ट्रीय शिक्षा आन्दोलन का इतिहास'' प्रकाशित हुई। इसके लेखक हैं, डॉ. देवेन्द्र स्वरूपजी। दिल्ली विश्वविद्यालय में इतिहास विभाग के प्राध्यापक थे, अब सेवा निवृत्त हो गये हैं। अनेक लोग इन्हें 'पांचजन्य' नामक पत्रिका के सम्पादक के रूप में जानते हैं। डॉ. देवेन्द्र स्वरूप जी इस पुस्तक की प्रस्तावना में देश के शिक्षाविदों एवं पाठकों के सम्मुख तीन प्रश्न उठाते हैं। इन तीनों प्रश्नों में पहले कथन है और कथन के साथ प्रश्न है। उन का पहला कथन है- सब कोई यही कहता है कि देश की शिक्षा की स्थिति अनुकूल नही है, इसमें बदलाव आना चाहिए। कौन कहता है? राजनीतिज्ञ कहते हैं, प्रशासनिक अधिकारी कहते हैं, कुलपति कहते हैं, प्राध्यापक कहते हैं। समाज का उद्योगपति व व्यवसायी वर्ग का व्यक्ति भी कहता है, समाज का प्रत्येक वर्ग कहता है कि भारत की शिक्षा में बदलाव आना चाहिए। शिक्षा में बदलाव आना चाहिए, यह कहते तो सब हैं किन्तु प्रयास कौन करता है?

आज की परिस्थितियों से सीधा जुड़ा हुआ और अत्यन्त प्रासंगिक प्रश्न देवेन्द्र स्वरूपजी खड़ा करते हैं कि यदि केवल शिक्षानीति में बदलाव कर दिया जाय, परन्तु राजनीति, अर्थनीति और समाजनीति ऐसी ही चलती रहे जैसी आज चल रही है, तो क्या शिक्षानीति का परिवर्तन प्रभावी होगा? क्या वह समाज को आगे तक ले जा पायेगा अथवा क्या समाज की दिशा बदल पायेगा? आगे वह इसके ठीक विपरीत प्रश्न खड़ा करते हैं कि मानों आपने राजनीति, अर्थनीति व समाजनीति में परिवर्तन कर दिया परन्तु शिक्षानीति को छूआ भी नहीं, तो क्या यह परिवर्तन टिकाऊ होगा? यह उनका दूसरा प्रश्न है। अर्थात् वे यह कहना चाहते हैं कि केवल शिक्षानीति में परिवर्तन लाने से राष्ट्र या समाज का सर्वतोन्मुखी विकास तब तक सम्भव नहीं है, जब तक शिक्षानीति, राजनीति, अर्थनीति एवं समाजनीति में भी एक साथ परिवर्तन न किया जाय।

अगला व तीसरा महत्त्वपूर्ण प्रश्न वे यह उठाते हैं कि शिक्षानीति में परिवर्तन करे कौन? हम सभी लोकतंत्र में रहने के कारण इस बात के अभ्यासी हो गये हैं कि पार्लियामेंट करेगी, सरकार करेगी। हम यह मान कर चलते हैं कि हर बात सरकार के हाथों में अर्थात् सत्ता के हाथों में केन्द्रित है। अतः सभी काम सरकार को ही करने चाहिए।

सरकारी तंत्र का हाल :-

सरकार के काम के साथ एक बड़ी समस्या यह है कि सरकार प्रत्येक काम में अपना मैकेनिजम अर्थात् अपना एक तंत्र खड़ा करने का प्रयास करती है। उस तन्त्र को उस मैकेनिजम को परिपूर्ण बनाने में अधिक ऊर्जा, अधिक धन व्यय होता है, परन्तु उसका प्रभाव व परिणाम उतने नहीं होते, जितने होने चाहिए। जैसे हमें सुबह जल्दी कहीं जाना होता है तो हम पहले अलार्म घड़ी में और आजकल मोबाईल में अलार्म लगाते हैं। सुबह जब अलार्म बजता है तो सबसे पहले हम अलार्म को बन्द करते हैं, करवट लेते हैं और सो जाते हैं। मोबाईल या घड़ी में अलार्म बजना मैकेनिजम है और उसे बन्द कर सो जाना एन्टीमैकेनिजम है। प्रत्येक मैकेनिजम से एक एन्टीमैकेनिजम स्वतः ही जन्म लेता है। इस प्रकार हम इस मैकेनिजम से बन्ध जाते हैं इसे मैं इस उदाहरण से समझाता हूँ। एक स्थान पर दो मजदूर सरकारी काम कर रहे थे। क्या कर रहे थे? एक मजदूर गड्ढ़ा खोद रहा था और दूसरा उस गड्ढ़े में मिट्टी भर रहा था। फिर थोड़ी दूरी पर लगभग 10 फिट दूर जाकर पहला मजदूर गड्ढा खोदता है और दूसरा उसमें मिट्टी भरता है। एक

दुकानदार अपनी दुकान पर बैठा-बैठा यह सब देखता है। उससे रहा नहीं गया, उसने उस मजदूर से पूछा, यह क्या कर रहे हो? तो वह बोला वृक्षारोपण कर रहे हैं। वृक्षारोपण कर रहे हो तो वृक्ष कहाँ हैं? उसने बताया कि हम तीन लोगों की गेंग है। मेरा काम गड्ढा खोदना है और इसका काम मिट्टी भरने का है और तीसरे का काम पौधा लगाना है। तीसरा आज छुट्टी पर है, इसलिए आया नहीं। हम दोनों आये हैं, इसलिए हम दोनों अपनी ड्यूटि पूरी कर रहे हैं। यह सरकार का मैकेनिजम है, इस मैकेनिजम को पूरा करने के लिए हम बन्ध जाते हैं। बिना विवेक के जब मैकेनिजम को पूरा किया जाता है तो परिणाम क्या होता है? यह हम सब जानते हैं। देवेन्द्र स्वरूपजी कहते हैं कि संसद या सरकार परिवर्तन करे, इससे बेहतर होगा कि शिक्षा को जानने वाले विद्वान संसद में बैठे लोगों के मानस में परिवर्तन करें। वास्तव में आज की शिक्षा व्यवस्था के सामने यह सबसे बड़ी चुनौती है। यह चुनौती केवल शिक्षाविदों का विषय न होकर सम्पूर्ण समाज का विषय बनना चाहिए।

मेरा प्रिय प्रसंग :-

प्रसंग महाभारत का है, आप सभी जानते हैं, मैं उसी प्रसंग को आज की शिक्षा व्यवस्था से जोड़कर आज की भाषा में आपको बताता हूँ। भीष्म पितामह ने एक इंस्टिट्युशन खोला। उसकी विशेषता थी सेंट परसेंट मेनेजमेंट कोटा, आउट साइड एडमिशन बिल्कुल नहीं। धृतराष्ट्र के सौ लड़कों को तथा पाण्डु के पाँच पुत्रों को ही एडमिशन दिया जाना तय था। भीष्य पितामह ने उस इंस्टिट्यूट के लिए एक डायरेक्टर साहब को नियुक्त किया। डायरेटक्र साहब ने कहा कि मेरा भी एक पुत्र है, उसे मैं कहाँ भेजूँगा। स्पेशल परमिशन देकर उसको भी एडमिशन दे दिया गया। बस! एक सौ छः अब आगे एडमिशन नहीं हो सकता।

अब इंस्टिट्युशन शुरू हुआ, डायरेक्टर बड़े दक्ष, बड़े नामी इसलिए समाज में एक अच्छा सन्देश गया। एक दिन ट्राइबल इलाके का एक नवयुवक खोजते-खोजते उस इंस्टिट्युशन में आया और डायरेक्टर साहब से कहा, मुझे भी एडमिशन चाहिए। डायरेक्टर साहब ने रूल्स बताये, हमारे यहाँ 100 प्रतिशत मेनेजमेन्ट कोटा है, आउट साइड्स नॉट अलाउड। बस 106 एडमिशन होने थे सो हो गये, अब कोई चांस नहीं। उस नवयुवक ने फिर कहा, चेयरमेन से रिक्वेस्ट कर दीजिए, बड़ी दूर से उम्मीद लेकर आया हूँ, सीखने का पक्का निश्चय करके आया हूँ अगर एडमिशन हो जाये तो अच्छा रहेगा। डायरेक्टर साहब ने कहा, हमारे चेयरमेन साहब बड़े स्ट्रीक्ट हैं, बाहर का कोई एडमिशन, किसी भी हालत में परमिशन नहीं देंगे। बिचारा वह नवयुवक लौट गया। परन्तु निराश होकर नहीं गया, दृढ निश्चयी जो था। आप सबने यह कथा सुनी हुई है, इसलिए व्याख्या नहीं कर रहा हूँ। मेरे मन में उनके प्रति तनिक भी अश्रद्धा का भाव नहीं है, मैं तो बस! आज के सन्दर्भ में उनके पक्ष-विपक्ष पर टिप्पणी कर रहा हूँ।

अब कथा आगे बढ़ती है, कुछ दिनों बाद उन 106 विद्यार्थियों के साथ डायरेक्टर साहब पिकनिक पर जंगल में गये, उनके साथ एक पालतु कुत्ता भी था। कुत्ता उनसे आगे-आगे भाग रहा था। एक स्थान पर किसी अन्य को देखकर वह जोर-जोर से भौंकने लगा। थोड़ी देर में उसका भौंकना बन्द हो गया। लौटकर जब वह उन सबके पास आया तो सब उसे देखकर आश्चर्यचकित थे। आश्चर्य इस बात का था कि कुत्ते का मुँह पूरा बाणों से भरा हुआ था, किन्तु इस तरह से बाण भरे थे कि खून की एक भी बून्द नहीं निकली थी। ऐसा अद्भुत सरसंधान कि बाणों से मुँह भर गया और भौंकना बन्द हो गया, परन्तु रक्त बिल्कुल नहीं निकला। ऐसे व्यक्ति को, ऐसे श्रेष्ठ धनुर्धर को वे सभी ढूँढ़ने हेतु कुत्ते के पीछे-पीछे गये। कुत्ता एक स्थान पर रुका, एक युवक ने आकर डायरेक्टर साहब को प्रणाम किया। डायरेक्टर साहब ने उसे पहचाना नहीं अतः पूछा, कौन हो वत्स? इस प्रकार की सरसंधान की विद्या किससे सीखी? गुरुजी आपका ही स्टुडेन्ट हूँ, और आपसे ही यह विद्या सीखी है। अरे! मुझ से कब सीखी? मैंने तो इन 106 स्टुडेंट के अलावा न तो किसी को एडमिशन दिया और न किसी को सिखाया, फिर तुम्हें मैंने कब सिखाया? तब वह युवक बताने लगा, सामने चबुतरे पर मैंने आपकी प्रतिमा स्थापित कर रखी है। मैं गुरु प्रतिमा के सम्मुख ध्यान लगाकर बैठता था, जब आप इन राजकुमारों को शिक्षा दिया करते थे, तब मैं उसे ध्यानावस्था में देख लेता था और उसी का तन्मय होकर कठोर अभ्यास करता था। परिणाम स्वरूप मैं यह विद्या सीख गया हूँ। आज की भाषा में गुरुजी जो कुछ अपलोड करते थे, उसी को वह डाउनलोड कर लेता था। इस तरह उसने गुरुजी की साइट हैक करली थी।

इसके बाद आगे की कथा जो इस कथा का एक्स्ट्रीम है, वह यह कि डायरेक्टर ने उससे पूछा, तुम कैसे स्टुडेन्ट हो? कभी क्लासरूम में आये नहीं, कभी लेबोरेट्री में दिखे नहीं, प्लेग्राउण्ड में भी आये नहीं और न कभी केन्टिन में दिखाई दिये, कहाँ गये थे? कैसे स्टुडेन्ट हो? मैं तो डिस्टेन्स लर्निंग वाला स्टुडेन्ट था, ऑनलाइन कोर्स था मेरा, नोन एटेंन्डिंग कोर्स होने के कारण मैं आपको कभी दिखा नहीं। मैं यहीं से सारा काम करता था। गुरुजी ने कहा,

तुम्हारे सारे पेमेन्ट्स जैसे- तुम्हारी ट्यूशन फीस, एक्जाम फीस आदि जो -जो भी कुछ होता है, सब क्लियर हो गया या नहीं? गुरुजी मुझ से तो कभी माँगा ही नहीं गया और मैं दुबारा कभी इंस्टिट्यूट में आया ही नहीं। फिर तो डिग्री मिलने में बहुत तकलीफ होगी, इसलिए पहले ड्यूज क्लियर करो। फिर हम सब जानते हैं कि उस ड्यूज के नाम पर उसके शरीर का एक महत्त्वपूर्ण अंग माँग लिया गया जो धनुर्विधा का आधार था। मैं फिर से कह रहा हूँ कि मेरे मन में उन डायरेक्टर साहब के प्रति कोई दुर्भावना नहीं है। केवल एक घटना का आज के परिप्रेक्ष्य में निरूपण मात्र कर रहा हूँ। उनकी अपनी मर्यादाएँ थीं। भारतीय शिक्षा के इतिहास में पहले प्राईवेट ट्यूटर के रूप में उनका नाम दर्ज है। इनसे पहले हमारे यहाँ चाहे राजा का लड़का हो या किसान का, सबको गुरुजी के आश्रम में जाकर ही शिक्षा प्राप्त करनी होती थीं। यह पहले प्राइवेट ट्यूटर थे जो राजदरबार में आकर राज्याश्रित होकर शिक्षा प्रदान करते थे।

स्किल को शिक्षा का अंग नहीं मानना :-

इसका परिणाम क्या हुआ? आज सरकार चर्चा करती है, स्किल डवलपमेंट की। शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति में ज्ञानात्मक, कौशलात्मक और अभिवृत्यात्मक विकास करना है। डवलपमेंट ऑफ नॉलेज, दूसरा परिवर्तन आना चाहिए उस नॉलेज को कैसे ट्रांसलेट इन टू प्रेक्टिस करना अर्थात् उपयोग में लाने की क्षमता, जिसे कौशलात्मक विकास कहा गया। इनके आधार पर उसके जीवन में, सोचने के ढंग में और जीवन दृष्टि में परिवर्तन आना चाहिए। व्यक्ति पहले भी अन्धविश्वासी और बाद में भी अन्धविश्वासी, पहले भी विवेकहीन और बाद में भी, पहले भी विचारवान नहीं और बाद में भी नहीं। ऐसी शिक्षा की उपयोगिता स्वतः समाप्त हो जाती है। महाभारत के इस पुराने प्रसंग को हम भले ही वर्तमान से जोड़ रहे हैं, हमारे लिए विचार की बात यह है कि हमारी शिक्षा व्यवस्था ने पिछले 71 वर्षों में भारतमाता के सारे सपूतों के अंगूठे कटवा लिये। स्किल को शिक्षा का अंग ही नहीं माना गया। साक्षरता और निरक्षरता के सरकारी आँकड़ों के मायाजाल में ज्ञान की विभिन्न विधाओं को हटा दिया गया। हमारे देश में वाचिक परम्पराओं का ज्ञान शिक्षा का एक बड़ा अंग होत था, उसकी चर्चा ही बन्द कर दी गई। जैसे-वक्तृत्व कला, सुनी हुई सौ बातों को याद रखना, शतावधानी बनना आदि को शिक्षा नहीं मानना।

भारत में शिक्षा की जो विशेषताएँ थीं, उनमें शिक्षा राज्य के अधीन नहीं थीं, वह राज्य के अधीन हो गई। जो शिक्षा निःशुल्क थीं, वह शुल्क युक्त हो गई। जीवन में शिक्षा द्वारा जो दृष्टि विकसित की जाती थीं, वह दृष्टि विकसित करने वाली शिक्षा व्यवस्था ही हमने त्याग दी। आज शिक्षा माने एक पाठ्यक्रम, उस पाठ्यक्रम को पूरा करना, उस पर आधारित परीक्षा, परीक्षा में प्राप्त अंक, मार्कशीट और प्रमाणपत्र। उस प्रमाणपत्र के आधार पर नौकरी, यह शिक्षा की सीधी सरल रेखा बन गई है। इसके कारण जीवन में विकास करने वाली शिक्षा का विचार ही हमने त्याग दिया।

पंचकोशात्मक विकास

भारत में शिक्षा जीवन विकास के लिए दी जाती रही है। उपनिषद् में व्यक्ति का व्यक्तित्व पंचकोशात्मक बताया है। ये पाँचकोश हैं- अन्नमय कोश, प्राणमय कोश, मनोमय कोश, विज्ञानमय कोश तथा आनन्दमय कोश। व्यवहार जगत में इन कोशों का विकास करना ही व्यक्तित्व का विकास करना है।

- **शारीरिक विकास :** अन्नमय कोश अर्थात् हमारा यह शरीर, इस शरीर का विकास करना ही शारीरिक विकास है। शरीर का विकास यानि विद्यार्थी को पहलवान बनाना नहीं, दारासिंह बनाना नहीं है। शरीर का विकास करना अर्थात् शारीरिक क्षमताओं का विकास करना। आज शिक्षा की सम्पूर्ण व्यवस्था में शारीरिक शिक्षा का पक्ष समाप्त हो गया है। शारीरिक शिक्षा याने स्पोर्टमेन, अर्थात् खेलकूद की स्पर्धाओं में पदक व शील्ड लाने की जुगाड़ लगाना ही शारीरिक शिक्षा का अंग हो गया है। शारीरिक शिक्षा इन बातों का विकास नहीं, अपितु शरीर में जो जन्मजात क्षमताएँ व सम्भावनाएँ हैं, यथा- बल, लोच, गति, उछाल व तितिक्षा आदि का विकास करना है। यह विकास करना शिक्षा का अंग बनना चाहिए।
- **प्राणिक विकासः** प्राणमय कोश अर्थात् प्राणशक्ति। प्राणशक्ति के विकास के बारे में हमारी शिक्षा व्यवस्था में कोई विचार नहीं होता। बाबा रामदेव की कृपा से थोड़ा योग का प्रचार हो गया और थोड़ा आसन से आगे प्राणायाम तक हमने योग को मान लिया। शेष छः अंगों के बारे में शायद नाम भी न सुने हों। मैं प्रायः कहता हूँ कि श्रीमद्भगवद् गीता के सारे अध्यायों का नाम किसी न किसी योग पर आधारित है। पहला ही अध्याय अर्जुन विषाद योग है। इसमें युद्ध होने वाला है, शंख ध्वनि हो चुकी है, अर्जुन श्रीकृष्ण से कहते हैं कि दोनों सेनाओं के बीच में रथ को ले चलो और खड़ा कर दो। श्रीकृष्ण रथ ले जाते हैं और भीष्म पितामह के

रथ के सामने खड़ा कर देते हैं। अर्जुन उन सबको देखकर कहता है, अरे! ये तो पितामह हैं, द्रोणाचार्य और कृपाचार्य तो गुरुजी हैं, ये शल्य मामा हैं। अन्य सबमें कोई भाई है, भतीजा है, ताऊ हैं, सबके सब रिश्तेदार हैं। अगर इन्हें मारकर युद्ध जीतना है और राज्य प्राप्त करना है तो मैं नहीं करूँगा। रथ को वापस ले चलो कृष्ण। आज की भाषा में कहा जाय तो अर्जुन को नर्व ब्रेकडाउन हो गया। उस समय कृष्ण ने अर्जुन को यह नहीं कहा कि ऐसा करो अर्जुन तुम्हारा युद्ध करने का मूड नहीं बन रहा, तुम तो रथ के पीछे जाओ और हलासन करलो, दो मिनट शिरशासन करलो, सर्वांगासन करलो और साथ में जरा अनुलोम-विलोम करो, भस्त्रिका या भ्रामरी प्राणायाम करलो तो तुम्हारा मूड बन जायेगा, ऐसा नहीं कहा। अर्जुन को विषाद हो गया, विषाद यानि वही नर्वशनेस, वह विषाद दूर करने के लिए अर्जुन का विषाद ही योग है। वहाँ तो आसन-प्राणायाम की बात नहीं की, फिर यह कैसा योग है? बाबा रामदेव की कृपा से योगसूत्र के प्रणेता ऋषि पंतजलि को कहा जाता है। एक और शब्द है योगेश्वर, योगेश्वर शब्द पंतजलि के लिए नहीं है, भगवान कृष्ण के लिए है। आपने दुनियाँ भर में श्रीकृष्ण के अनेक चित्र देखे होंगे। किसी चित्र में माखन चुराते हुए, किसी में गाय चराते हुए, किसी में गाय की पूजा करते हुए, किसी में रास रचाते हुए, नृत्य करते हुए, यहाँ तक की अर्जुन का रथ चलाते हुए के चित्र तो देखे होंगे, परन्तु कभी उन्हें हलासन करते हुए या सर्वांगासन करते हुए अथवा अनुलोम-विलोम करते हुए श्रीकृष्ण का चित्र कभी नहीं देखा होगा, फिर भी हम उन्हें योगेश्वर कहते हैं। किस बात के लिए योगेश्वर कहते हैं, योग तो कभी करते नहीं। इसका अर्थ यह है कि योग शिक्षा का विषय था। हमने उसको केवल शारीरिक स्वास्थ्य के साथ सीमित कर दिया। इस योग का हमने अलग विचार कर लिया, वास्तव में यह शिक्षा का अंग होना चाहिए। शिक्षा ही योगाधारित होनी चाहिए।

बालक में प्राणिक विकास होना चाहिए। जब प्राणशक्ति का विकास होगा, तभी शरीर काम करेगा। एल.ई.डी. में से प्रकाश आना, ए.सी. में से ठण्डी हवा आना, माइक में से आवाज आना तभी तक चलता है, जब तक बिजली है। जैसे ही विद्युत परिपथ भंग होगा, करण्ट आना बन्द होगा त्यों ही ये सारे उपकरण काम करना बन्द कर देंगे। अर्थात् बिजली यह प्राणशक्ति है। शरीर भी प्राणशक्ति से चलता है, हमने उस प्राणशक्ति को केवल आसन प्राणायाम नही माना। यह प्राणशक्ति तो शरीर की जीवनी शक्ति है, इस जीवनी शक्ति के विकास के लिए शिक्षा होनी चाहिए।

हम सब बड़े प्रसन्न हैं कि विश्व के इतने देशों ने 21 जून को योग दिवस के रूप में स्वीकार कर लिया है। हमारी सरकार, हमारे प्रधानमंत्री और हमारे देश को इसका श्रेय मिला है, इसलिए हम सबके लिए यह आनन्द की बात है। हम भारतीय इसलिए प्रसन्न नहीं हैं कि योग जैसी भारतीय विद्या की सम्पूर्ण विश्व में स्थापना हो गई, अपितु इसलिए प्रसन्न हैं कि हमारे पतंजलि अमेरिका की परीक्षा में पास हो गये। शिक्षा का यह स्वरूप जो हमारे अन्दर गौरव का भाव जगाने वाला होना चाहिए।

- **मानसिक विकासः** शरीर सबल हो, प्राणशक्ति प्रबल हो, मन एकाग्र हो, अनासक्त हो और शान्त हो, यह विकास की पहली शर्त है। प्राणशक्ति को भी प्रभावित करने वाली मन की शक्ति है। मन के लिए कहा है, **''मन एवं मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयो''** मन मनुष्य को बन्धन में डालता है तो वही मन उसे मोक्ष भी दिलवाता है। ऐसे मन की शक्ति को बढ़ाना, यह शिक्षा का अंग होना चाहिए था। शिक्षा क्षेत्र में हमने मन की शिक्षा का विचार ही नहीं किया। मनोमय कोश के विकास का विचार शिक्षा से ही बाहर कर दिया गया। मन के लिए मैंने जैसा कहा कि मन शान्त होना चाहिए, मन एकाग्र होना चाहिए और अनासक्त होना चाहिए, परन्तु मन का स्वभाव तो बड़ा चंचल है, मन कभी भी कहीं भी चला जाता है।

  महाभारत में यक्ष प्रश्न का प्रसंग आता है। उसमें एक प्रश्न है, यक्ष ने युधिष्ठिर से पूछा, वायु से भी तीव्र गति किसकी है? युधिष्ठिर ने उत्तर दिया मन की गति। हम इस सभागार में बैठे हैं और अभिनव भारत जैसे महत्त्वपूर्ण विषय पर चर्चा कर रहे हैं, लेकिन हम में से अनेक बन्धु यहाँ बैठे-बैठे अपने किसी मित्र से मिल आये होंगे, माताजी का हालचाल पूछ आये होंगे, कुछ बहनों ने आज अचार को धूप दिखाई होगी या नहीं, यह चिन्ता करली होगी। यहाँ बैठे-बैठे अनेक चीजें हमारे मन में चलने लगती है, हमारा मन कहाँ-कहाँ चक्कर लगाकर आ जाता है, इसका हमें ही पता नहीं लगता। इस मन की शक्ति को केन्द्रित करना, इसे एकाग्र करना शिक्षा है। स्वामी विवेकानन्दजी कहते हैं कि मुझे यदि एक और जन्म मिला तो मैं अपनी सारी

शक्ति मन को एकाग्र करने में लगाऊँगा। शिक्षा के द्वारा मन को साधने का प्रयास होना चाहिए। आज हमारे देश के किसी भी विद्यालय या महाविद्यालय में मन की शक्ति के विकास की शिक्षा देने का कोई भी प्रावधान नहीं है। फिर शिक्षा में होता क्या है? रट लर्निंग होता है, छोटी कक्षा है, मैं ब्लेकबोर्ड पर लिखता हूँ और बच्चों को उसे उतार लेने को कहता हूँ। थोड़ी बड़ी कक्षा है तो मैं कहता हूँ कि मैं डिक्टेड कर देता हूँ, तुम सब लिख लो। और बड़ी कक्षा है तो कहता हूँ कि पेज न. 43 खोल लो, नीचे से दूसरा पेराग्राफ प्रश्न 3 का उत्तर है, यहाँ से वहाँ तक मार्क करलो और कॉपी में लिखलेना और उसे रट लेना, परीक्षा में यह प्रश्न आये तो उत्तर लिख देना। इसके आधार पर छात्र पास या फेल होते हैं। यह है, आज की शिक्षा का स्वरूप, जिसे शिक्षाविद् 'गल्प एण्ड वोमेट मैथड' कहते हैं। पूरे वर्ष निगलते जाओ और परीक्षा की कॉपी में वमन अर्थात् उल्टी कर आओ, पास हो जाओगे। हम शिक्षा के माध्यम से व्यक्तित्त्व के विकास का विचार नहीं करते केवल पास हो जाय, इसी की चिन्ता करते हैं।

- **बौद्धिक विकास :** सामान्यतया मन की चंचलता दूर होकर एकाग्रता होना सरल काम नहीं है। इसके लिए मन के ऊपर बुद्धि का नियंत्रण आवश्यक है, ऐसा अपने मनीषियों ने कहा है। मन पर बुद्धि का नियंत्रण हो, इसको समझाने के लिए कठोपनिषद् में और भगवद् गीता में रथ का रूपक दिया गया है:-

आत्मन्ँ रथिनं विद्धि शरीरँ् रथमेव तु।
बुद्धिं तु सारथिं विद्धि मनः प्रगहमेव च ।।
इन्द्रियाणि हयानाहुर्विषयाँ् स्तेषु गोचरान्।
आत्मेन्द्रियमनोयुक्तं भोक्तेत्याहुर्मनीषिणः ।।

हमारा यह शरीर रथ के समान है, इस रथ में दस घोड़े जुते हुए हैं। ये दस घोड़े हमारी इन्द्रियाँ हैं, पाँच कर्मेन्द्रियाँ व पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ। ये दसों इन्द्रियाँ घोड़े के स्वभाव वाली हैं। घोड़ा दौड़ता रहता है, जिधर मुँह उठ जाय उधर दौड़ जाता है। तनिक विचार कीजिए किसी रथ में जुते घोड़े दसों दिशाओं में दौड़ने लगें तो रथ का क्या होगा? इन दसों घोड़ों को नियंत्रण में रखने के लिए वल्गाय अर्थात् लगाम की जरूरत पड़ती है, वैसे ही इस शरीर में घोड़ों रूपी इन दसों इन्द्रियों को नियंत्रण में रखने वाला मन लगाम है। मन का नियंत्रण इन इन्द्रियों पर होता है, तभी इन्द्रियाँ ठीक दिशा में कार्य करती हैं। लेकिन लगाम स्वयं कुछ नहीं कर सकती, यह जिसके हाथ में होती है, वह सारथी लगाम खींचता है तब घोड़े चलते हैं या रुकते हैं। मन रूपी लगाम को खींचने वाला सारथी बुद्धि है। मन जब बुद्धि के कहे अनुसार चलता है, तभी वह इन्द्रियों को भी सही दिशा में चला पाता है। सारथी रूपी बुद्धि जब विवेकशील होगी तभी वह निर्णय कर पायेगी कि इस दिशा में जाना चाहिए या नहीं। बालक जीवन पर्यन्त माता-पिता या शिक्षक की अंगूली पकड़कर चलने वाला नहीं है। उसको जीवन में विकास करने के लिए स्वयं निर्णय लेने होंगे, उसके लिए बुद्धि का विवेकी होना आवश्यक है। परन्तु आज की शिक्षा बुद्धिशक्ति का विकास करने वाली नहीं है। हमारा जो समग्र शिक्षा का प्रतिमान है, उसमें बुद्धिशक्ति का विचार है, उसमें कहा गया - शरीर सबल हो, प्राणशक्ति प्रबल हो, मन शान्त, एकाग्र एवं अनासक्त हो और बुद्धि विवेकपूर्ण हो। प्रश्न खड़ा होता है कि इन सबका विनियोग कहाँ हो, सबका उपयोग क्या होना चाहिए?

- **नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास :** विकसित शरीर, प्राण, मन और बुद्धि इन सबका उपयोग एक ही काम के लिए होना चाहिए, और वह है, नैतिकता व आध्यात्मिकता का विकास करना। यह विकास करना शिक्षा का अन्तिम लक्ष्य है। आध्यात्मिकता का अर्थ सबको संन्यास लेना चाहिए और हिमालय की शरण में जाना चाहिए, ऐसा नहीं है। सांसारिक जीवन में रहते हुए, जीवन के सभी नियमों का पालन करते हुए अपने जीवन में आत्मतत्त्व को जानना, यह हमारी आध्यात्मिकता की अवधारणा है। ईश्वर का एक चैतन्य अंश जो मेरे अन्दर है, वही अंश आपके अन्दर है, वही अंश पशु-पक्षी में, वृक्ष-वनस्पति में, नदी-पर्वत में तथा ग्रह-नक्षत्र सब में विद्यमान है। यह धारणा ही हमारे देश की, भारतीयता की और हिन्दू की आध्यात्मिकता है। आध्यात्मिकाता की इतनी समझ आ गई तो समाज की सभी विपत्तियों का समाधान इसी में से निकल आयेगा। यदि मैं यह स्वीकार कर लूँ कि मुझमें जैसा ईश्वर का अंश है, वैसा ही आपके अन्दर भी है तो क्या मैं आपको कष्ट पहुँचा सकता हूँ? मुझे लगेगा कि मैं उस परम पिता परमात्मा का अपमान कर रहा हूँ। यह विचार आने पर क्या मैं आपसे धोखा-धड़ी कर सकता हूँ, क्या आपको दुर्वचन कह सकता हूँ, आपका अपमान कर सकता हूँ? नहीं, कदापि नहीं। ईश्वर की उपस्थिति प्रत्येक कण-कण में है। कल ही स्वामीजी ने कहा था - "**ईशावास्यमिदं**

सर्वं यत्किञ्चजगत्यांजगत्'' कण-कण में भगवान की मान्यता का अनुभव करना ही आध्यात्मिकता है। नैतिकता अलग से कोई विषय नहीं है, आध्यात्मिकता ही उसकी आधार भूमि है। व्यक्ति जब नैतिक होगा तभी वह आध्यात्मिक होगा। अध्यात्म के बिना नैतिकता नहीं आ सकती। हम किसी को कानून से नैतिक नहीं बना सकते, अध्यात्म से बना सकते हैं। अतः आध्यात्मिकता, यह मूल विचार है, इस मूल विचार को व्यक्ति के अन्तःकरण में स्थापित करना ही शिक्षा का परम उद्देश्य है।

आध्यात्मिकता के कारण ही संवेदनशीलता जागृत होती है। यह परिवार मेरा, समाज मेरा, राष्ट्र मेरा, मुझे इस राष्ट्र के लिए सब कुछ करना चाहिए, यह विचार स्थापित करने वाली शिक्षा व्यवस्था ही भारत की शिक्षा है। ऋषि-मुनियों द्वारा दी गई शिक्षा पुनः स्थापित होगी, तभी अभिनव भारत की संकल्पना भी साकार हो सकेगी।

- **शिक्षाा के समक्ष चुनौती :** आजकल वाट्सएप पर अनेक सन्देश आते हैं। मेरे एक मित्र ने मुझे एक मेसेज भेजा, मैं उसका उल्लेख इस सन्दर्भ में कर रहा हूँ। इस मेसेज में एक-दो सैकण्ड की छोटी-छोटी क्लिपिंग्स हैं। एक 5-6 वर्ष का छोटा बच्चा है, माँ बैठी हुई कुछ काम कर रही है। बच्चा आता है, बड़े लाड़ से माँ के गले में हाथ डालता है और कहता है, 'ममा! आई लव यू'। माँ ने उसके सिर पर हाथ फैरा, गाल थपथपाया और बोली, 'आई लव यू बेटा'। बच्चा चला जाता है और खेलने में लग जाता है।

  अगली क्लिपिंग, वही बच्चा, दस वर्ष बाद की बात है। अब वह 15-16 वर्ष का हो गया है, स्कूल जाता है पढ़ाई करता है, इसलिए समय कम है माँ के पास आने का, कभी-कभी माँ के पास आता है। एक दिन वह आया और बोला, 'ममा! आई लव यू'। माँ जानती है कि आज आई लव यू क्यों कर रहा है। माँ बोली, कितने पैसे चाहिए। मॉल जाना है या फिल्म देखने जाना है या और कोई प्रोग्राम है दोस्तों के साथ, कहीं घूमने जाना है क्या? और पैसे दे देती है।

  और दस वर्ष निकल जाते हैं, अब वह 25-26 वर्ष का युवा है। पढ़ाई पूरी हो गयी है, नौकरी या धन्धा कर लिया है। इसलिए अब तो माँ के पास आना और भी कम हो गया है। फिर भी एक दिन माँ के पास आकर कहता है, 'ममा! आई लव यू। माँ पूछती है, कौन है, कब मिलवायेगा? तेरे डेडी से बात मैं कर लूँगी, एरेंज करवा दूँगी। और दस वर्ष निकलते हैं, अब वह 36-40 की उम्र का हो गया है। युवा से प्रौढ़ता की ओर बढ़ रहा है। व्यस्तता और बढ़ गई है। बच्चे हैं, उन्हें होमवर्क करवाना है, स्कूल छोड़ना व लाना है, घर की अन्य व्यस्तताएँ हैं। फिर भी एक दिन माँ के पास आता है, वही डायलॉग, 'ममा! आई लव यू'। माँ बोली मैंने तो पहले ही समझाया था, इस लड़की से शादी मत कर। अब की है तो भोग, यह तेरी समस्या है।

  और 10-15 वर्ष निकल जाते हैं। वह 5-6 वर्ष का बच्चा अब वृद्ध हो गया है, आयु 55-60 वर्ष के लगभग है, उसकी माँ की आयु भी 75-80 के लगभग हो गई है। उसे अपने बच्चों की शादी की चिन्ता है, फिर भी एक दिन माँ के पास आता है और वही डायलॉग, 'ममा! आई लव यू' माँ बोली चाहे जितना लवयू-लवयू कर मैं किसी भी पेपर पर साइन नहीं करूँगी। वैसे तो यह चुटकला ही है, परन्तु इसमें हँसी के तत्त्व को निकाल दें तो जब वह 5-6 वर्ष का अबोध बालक था तब उसके लिए लव यू माने लव यू, माँ के प्रति प्रेमभाव होने के कारण ही वह आई लव यू कहता है। बड़े होने के बाद तो आई लव यू के माने माई गर्लफ्रेंड, माई फेमिली, माई प्रोपर्टी है। माई, मी, मेरा में पूरा जीवन निकल रहा है। आज की शिक्षा एक सेल्फ सेन्टर्ड अर्थात् आत्मकेन्द्रित पीढ़ी तैयार कर रही है, जिसे अपने परिवार, समाज और देश - दुनियाँ से मानवता से कोई मतलब नहीं है। मैं, मेरे सुख के लिए कुछ भी करने को तैयार हूँ। यह व्यक्तिवादी चिन्तन शिक्षा के सामने बहुत बड़ी चुनौती है। हमें इस चुनौती को स्वीकार कर वर्तमान शिक्षा की दिशा बदलनी है।

- **शिक्षा में विखण्डित नहीं, समग्र दुष्टि हो :** मैं दो शिक्षाविदों के वक्तव्य बतलाता हूँ। एक ही प्रश्न लगभग 30 वर्षों के अन्तर से देश के दो बड़े शिक्षाविदों से पूछा गया था। सन् 1963 की बात है, उदयपुर में डॉ. डी. एस. कोठारी जो उस समय एज्यूकेशन कमिशन के चेयरमेन थे। उनका एक व्याख्यान हुआ, व्याख्यान के पश्चात् प्रश्नोत्तर का कार्यक्रम था। प्रश्नोत्तर में उनसे पूछा गया, डॉ. कोठारी हमारे देश की शिक्षा की मूलभूत समस्या क्या है (वाट इज अवर बेसिक प्रोबलम्स ऑफ एज्यूकेशन इन इंडिया) उन्होंने उत्तर दिया कि भारत के शिक्षाविदों और बुद्धिजीवियों का गुरुत्वकेन्द्र भारत के बाहर यूरोप और अमेरिका हो गया है। वहाँ जो कुछ भी होता

है, उसे यहाँ की शिक्षा का आदर्श मानकर लागू कर देते हैं। यह भी नहीं देखते कि वह हमारे देश के अनुकूल है या प्रतिकूल, हमारी संस्कृति, हमारे रीति-रिवाज, हमारी परम्पराओं के अनुकूल या प्रतिकूल का विचार किये बिना हम उसे एक्सपेरीमेन्ट के तौर पर लागू कर देते हैं और जब दो-चार साल बाद उसके दुष्परिणाम सबके सामने आते हैं, तब हम उसे रिजेक्ट करते हैं। नई पोलिसी के नाम पर फिर हमारा एक शिष्ट मंडल किसी यूरोपियन या अमेरिकी देश की यात्रा पर जाता है। वहाँ से कुछ नई विधाएँ, नई चीजें खोज लाते हैं और फिर अपने देश में लागू करने की कोशिश करते हैं। जो गुरुत्वकेन्द्र आज यूरोप में है, वह जब तक पुनः भारत में नहीं आयेगा तब तक हम कितने भी ऊपर-ऊपर के परिवर्तन करलें अभिनव भारत का विचार कैसे फलदायी होगा। अतः अभिनव भारत में इस गुरुत्वकेन्द्र को भारत में लाना, यह परमाश्वयक कार्य होगा।

ठीक यही प्रश्न सन् 2011 में डॉ. यशपाल से पूछा गया। टी. वी. पर उनका इन्टरव्यू चल रहा था। विनोद दुआ उनका इन्टरव्यू ले रहे थे। 5 सित. 2011 शिक्षक दिवस की रिकोर्डेट बात है। डॉ. यशपाल से पूछा, 'भारत में शिक्षा की मूलभूत समस्या क्या है? डॉ. यशपाल ने शिक्षा की जो आज की स्थिति है, उसकी ठीक-ठीक व्याख्या करते हुए उन्होंने कहा कि यह समस्या केवल अकेले भारत में ही नहीं है बल्कि विकासशील अर्थव्यवस्था वाले सभी देशों में है। समस्या क्या है? इन देशों में एक उच्चाधिकार प्राप्त समिति होती है, जो शिक्षा के निर्माण में पाठ्यचर्या बनाती है। पाठ्यचर्या बनाने वाले कोई ओर, पाठ्यक्रम बनाने वाले कोई ओर। उस पाठ्यक्रम पर पुस्तकें लिखने वाले कोई ओर। पाठ्यपुस्तकें लिखने वाले प्रोफेसनल राइटर्स होते हैं। कोईसा भी विषय हो और पाठ्यक्रम में कैसा भी परिवर्तन हो दो से छः महीने के अन्दर नई पुस्तक आ जाती है। जो पुस्तक लिखते हैं, वे क्लासरूम में पढ़ाने नहीं जाते। जो क्लासरूम में पढ़ाते हैं, वे प्रश्न पत्र नहीं बनाते। प्रश्नपत्र बनाने वाले कोई ओर, कॉपी जाँचने वाले कोई ओर। क्या सोचकर विद्यार्थी ने उत्तर दिया? इसका विचार किये बिना अंक देते हैं और उसे पास या फेल घोषित कर देते हैं। इस व्यवस्था के आधार पर हम शिक्षा में से कुछ भी आउटपुट नहीं निकाल पाते। इसका कारण हमारी विखण्डित दृष्टि है। हमको शिक्षा की व्यवस्था ठीक करने के लिए समग्रता में विचार करने की आवश्यकता है। हमने समग्रता को छोड़कर शिक्षा को मात्र इन तीन सिकंजों- पाठ्यक्रम, टाईमटेबल व परीक्षा में जकड़ रखा है, इसलिए नया कुछ भी नहीं निकाल पा रहे हैं।

- **गुरु के गुरुत्व को जगाना होगा :** शिक्षा के सम्मुख उपस्थित चुनौतियों पर शिक्षाविदों को विचार कर मार्ग निकालना चाहिए। सम्पूर्ण विश्व में आज शिक्षा का केन्द्र कम्प्यूटर व तकनीक बनी हुई है। हमारे यहाँ तो कम्प्यूटर की शुरुआत 1985 के बाद हुई, परन्तु अमेरिका में तो कम्प्यूटर 60-70 वर्ष पहले से चला आ रहा है। इन 70 सालों में आपने यह कभी नहीं सुना होगा कि अमेरिका में कॉलेज और युनिवर्सिटीज बन्द करने पड़े हों, क्योंकि विद्यार्थी कॉलेज आता ही नहीं, घर में ही कम्प्यूटर पर बैठकर अपनी पढ़ाई कर लेता है। ऐसा नहीं हुआ, हजारों वर्षों से स्थापित गुरु-शिष्य परम्परा का आज भी कोई विकल्प नहीं है। आज के तकनीकी युग में भी गुरु का या शिक्षक का महत्त्व समाप्त नहीं हुआ है। परन्तु गुरु का गौरव अवश्य कम हुआ है। हमारे देश की शिक्षा व्यवस्था में जिनको केन्द्र बिन्दु बनाकर भारत विश्व गुरु बना है। आज उस गुरु के गौरव को हमने भुला दिया है। हमने अर्थात् समाज ने भुला दिया है, मात्र इतना ही नहीं तो स्वयं गुरु को गुरु के गौरव का भान नहीं है। यही समस्या की जड़ है। आज के गुरु अथवा शिक्षक को लगता है कि हमसे तो प्रशासनिक अधिकारी, उद्योगपति या व्यवसायी अथवा अन्यान्य क्षेत्रों में गये हुए मेरे सहपाठी जितना कमाते हैं, उतना मैं नहीं कमा पाता हूँ। इस मानसिकता के कारण पिछले 15-20 वर्षों से एक नई स्थिति उत्पन्न हुई है। और वह यह कि आज शिक्षा के क्षेत्र में जाने को कोई तैयार ही नहीं है। मैं डॉक्टर या इंजिनीयर नहीं बन सका, आर. ए. एस. में भी चयन नहीं हुआ। बैंक या पोस्ट ऑफिस में अथवा रेल्वे में भी नम्बर नहीं लगा, अतः अन्तिम मजबूरी मान मास्टर ही बन जाता हूँ। ऐसे थके हुए तन और टूटे हुए मन से लगे हुए शिक्षकों के माध्यम से शिक्षा का उद्धार करने का स्वप्न कभी पूरा नहीं हो सकता। देश के सम्पूर्ण शिक्षक समुदाय को अपने दायित्व को समझने के साथ-साथ उसके प्रतिन्याय करने की नितान्त आवश्यकता है। इसलिए शिक्षक को, गुरु को उसके गुरुत्व को पुनः जाग्रत करने की अनिवार्य आवश्यकता है।

अनुक्रमणिका

सम्पादकीय

नरपतसिंह शेखावत : संयोजक अन्तराष्ट्रीय संगोष्ठी v

संदेश

वसुंधरा राजे : मुख्यमंत्री राजस्थान सरकार vii

संस्कार से संस्कृति की ओर

डॉ. जया दवे : अध्यक्ष (राज्यमंत्री), राजस्थान संस्कृत अकादमी, जयपुर ix

अभिनव भारत : संकल्पना एवं स्वरूप संगोष्ठी की प्रस्तावना

वासुदेव प्रजापति : सह संयोजक, संगोष्ठी xi

हमारी उन्नत ज्ञान परम्परा से अनुप्राणित हो शिक्षा

भगवती प्रकाश शर्मा xv

अभिनव भारत की संकल्पना और शिक्षा

अवनीशजी भटनागर xxi

अभिनव भारत एवं शिक्षा

1.1 **प्राच्य शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में अभिनव भारत की संकल्पना**

डॉ. शैलेन्द्र स्वामी 1

1.2 **वर्तमान शिक्षा – अपने आप में समस्या**

चेतन प्रकाश सेन 6

1.3 **अनौपचारिक शिक्षा–व्यवस्था**

डॉ. बनवारी लाल नाटिया 8

1.4 **भारत में शिक्षा का पुनरुत्थान**

डॉ. ईश्वरचन्द्र शर्मा 10

1.5 **अभिनव भारत और विद्यालय में मूल्य शिक्षा**

श्रीमती (डॉ.) चन्द्रकान्ता शर्मा
श्री (डॉ.) महेश चन्द्र शर्मा 15

1.6 **अभिनव भारत में शिक्षक शिक्षा**

श्रीमती ओम कँवर 17

1.7 Human Resource Management in Libraries - An Indian Context

Dr. Vinita Tak 19

1.8 **भारत में शिक्षा का स्वरूप**

मनीष शर्मा 28

अभिनव भारत एवं धर्म संस्कृति

2.1 **समकालीन संस्कृत साहित्य में अभिनव भारत की संकल्पना**

डॉ. सरोज कौशल 31

2.2 **वाल्मीकि–रामायण में राष्ट्र की संकल्पना**

डॉ. यादराम मीना 40

2.3 अभिनव भारत की धर्ममय संस्कृति
रामदयाल आर्य 46

2.4 भारतीय चिन्तन परम्परा में अभिनव भारत की संकल्पना
डॉ. दीपमाला 48

2.5 वेदांग ज्योतिष का इतिहास और अभिनव भारत
डॉ. (पण्डित) जितेन्द्र व्यास 51

2.6 वेदों में राष्ट्र चिन्तन के सूत्र
राजू 55

2.7 चन्द्रगुप्तमौर्यकालीन भारतीय संस्कृति का क्लासिकल ग्रंथों के आधार पर विश्लेषणात्मक अध्ययन
विकास चौधरी 58

2.8 अभिनव भारत और महाभारतकालीन पुरुषार्थ चतुष्टय
नेहा गौड़ 61

2.9 स्वातन्त्र्योत्तरकालीन राजस्थानीय कवि पं. मूलचन्द शास्त्री : कृतित्व एवं वैशिष्ट्य
जीनत जहां पठान 64

2.10 हमारी धर्म संस्कृति
डॉ. आरती पालीवाल 72

2.11 भारत भारती में अभिनव भारत की कल्पना
डॉ. सुषमा सोलंकी 73

अभिनव भारत एवं सामाजिक व्यवस्था

3.1 अभिनव भारत में समाज व्यवस्था
वासुदेव प्रजापति 77

3.2 भारतीय संस्कृति में आश्रम व्यवस्था एवं पुरुषार्थ
अम्बालाल जेदिया 79

3.3 प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी के काव्यों के अनुसार अभिनव भारत की संकल्पना
शिल्पा अग्निहोत्री
डॉ. संगीता आर्य 81

3.4 अभिनव भारत में सामाजिक न्याय के स्वरूप में जाति बाधक के रूप में
डॉ. लक्ष्मण सिंह राठौड 85

3.5 राजस्थान की समकालीन महिला कथाकारों की नारी विषयक अभिनव भारत की परिकल्पना
दिव्या राठौड़ 89

3.6 अभिनव भारत एवं सामाजिक व्यवस्था
डॉ. ऋचा गुप्ता 94

अभिनव भारत एवं कृषि

4.1 पश्चिमी राजस्थान में कृषि की वर्तमान स्थिति, भविष्य में संभावनाएँ व चुनौतियाँ
प्रो0 बलराज सिंह 97

4.2 Innovative approaches for sustainable agricultural practices in modern India
Rachana Modi Dinesh, Narpat S. Shekhawat. 99

अभिनव भारत एवं वाणिज्य एवं उद्योग

5.1 **अभिनव भारत में व्यवसायी का सामाजिक उत्तरदायित्व**
डॉ. ललिता परिहार 103

5.2 Small Scale Industries and Development of Rural India: An Analytical Study
Dr. Manisha Dave 108

5.3 Performance Appraisal in Banks: A Control Perspective
Dr. Sushma Maheshwari 115

5.4 **व्यवसाय का बदलता स्वरूपः ई कॉमर्स**
श्रीमती प्रेम परिहार 123

5.5 **अभिनव भारत एवं उद्योग**
डॉ. सुरेश के. वर्मा 125

अभिनव भारत एवं सुरक्षा

6.1 EMP Attack and Security Issues
Anand Harsha, Syam Sunder Ramdeo 129

6.2 Spiritual Intelligence and 21st Century : A Psychological Study
Dr. P.S. Rajpurohit 134

6.3 **सैन्य व सभ्यता के नगर नियोजन**
बलवीर चौधरी 139

अभिनव भारत एवं विज्ञान तकनीक

7.1 Nanomaterials and Nanotechnolgy
Sampat Raj Vadera 143

7.2 Need of environmental friendly sustainable extraction of natural mineral resources in innovative india
Dr. R P Choudhary, Prof. S. K. Parihar 147

7.3 Guggul –A treasure of Marudhara
Hema Somani and Sunita Kumbhat 162

7.4 Propagation Methods for Restoration of Important trees– Kair, Neem and Bamboo's
I.D. Arya, Sarita Arya 167

7.5 Application of Space technology (RS, GIS & GPS) in conservation and utilization of plant genetic resources
D.S.Ranawat 169

7.6 Conservation of rare, endangered and threatened (RET) plant species of Indian Thar Desert through tissue culture techniques
Ashok Kumar Patel, Narpat S. Shekhawat 170

7.7 In vitro propagation of *Lawsonia inermis* L. (Lythraceae): a cultivated plant of cosmetic and medicinal importance
Kheta Ram, N.S. Shekhawat 172

7.8 Cucurbitaceae: An important bioresource of Indian Thar Desert and micropropagation as a valuable tool for its conservation
Sumitra Kumari Choudhary, N.S. Shekhawat 173

अभिनव भारत एवं प्राकृतिक संसाधन, पर्यावरण

8.1 भारतीय मरूस्थल में वानस्पतिक विविधता एवं दुर्लभ पादपों का संरक्षण
चन्दन सिंह पुरोहित, रमेश कुमार एवं विनोद मैना 177

8.2 Relevance of the Traditional Environmental Conservation Practices in Modern India
Anil Kumar Chhangani, R.L. Gurjar, K.S. Bithoo 183

8.3 Plant Resources of Fragile Environments-Diversity, Ecosystem Services, Conservation & Sustainable Utilization using Conventional Wisdom,Biotechnology/Nanotechnology (Sustainocene in Anthropocene/Capitalocene/Corporatocene).
Smita Shekhawat, Richhpal Singh and N.S. Shekhawat 191

8.4 Degradation of Natural Resources in Western Rajasthan
L.S. Rajpurohit and Aazad P. Ojha 196

8.5 Biotechnological approaches for conservation of medicinal plants of Indian Thar Desert
Dheeraj Choudhary Jatan K Shekhawat, N.S Shekhawat and VinodKataria 198

8.6 Puducherry - Plant Diversity and Conservation – South Indian Concept of Abhinav Bharat
Mahipal Singh Shekhawat 199

8.7 Reliability of Ayurvedic Herbs in Context of Modern India and Global Market
Dr. Dheeren Panwar 200

8.8 Bio-prospecting of costal resources for development of coastal areas and improving lively-hood of coastal population
Mangal S. Rathore, Avinash Mishra, D.R. Chaudhary, Monica Kavale 203

अभिनव भारत एवं शिक्षा